Chapter-3

## –तृतीय परिच्छेद –

**दार्शनिक पक्ष–**

संस्कृत की दृश धातु से 'दर्शन ' शब्द बना जिसका अर्थ है देखना। किसी वस्तु सम्यक परिशीलन अथवा उसकी पूर्ण छान–बीन करके निश्चित किये गये सिद्धांतों को दर्शन कहा जाता है । अतः 'दर्शन ' विर्तक अथवा संशय का परिणाम है । संशय के कारण ही किसी वस्तु विशेष को जानने की इच्छा उत्पन्न होती है । अतः जिज्ञासा ,संशय और तर्क वितर्क ही दर्शन का मूल आधार है दार्शनिकों के सामने इस सृष्टि और उसके रचयिता के प्रति कौतूहल पूर्ण जिज्ञासा ,उस परम तत्व का साक्षात्कार ,जीवात्मा का जन्म एवं मृत्यु का रहस्य एवं वह सुख–दुख से क्यों ग्रसित है ? इस पर विचार किया गया है ।

इस प्रकार की जिज्ञासा की मूल स्रोत 'नासदीय सूक्त' एवं 'पुरुष सूक्त' ' है ।

श्वेताश्वरोपनिषद में गुरु से शिष्य कौतूहल जन्य प्रश्न पूछता है –

किं कारणं ब्रह्म कुतुः स्म जाता,
जीवन केन क्व च संप्रतिष्ठाः।
अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु,
वर्तमाहे ब्रह्मविहो व्यवस्थाम।। 1–

केनोपनिषद में भी शिष्य गुरु से प्रश्न पूछता है कि यह मन किसके द्वारा इच्छित और प्रेरित होकर अपने विषयों में गिरता है ? किससे प्रयुक्त होकर प्रथम प्राण चलाता है ? प्राणी किसके द्वारा इच्छा की हुई वाणी बोलते है। ? और कौन देव चक्षु तथा स्रोत को प्ररित करता है ?

---

1:– श्वेताश्वतरोपनिषद–1/2

केनपितं पतति प्रेषितं मनः।

केन प्राणः प्रथमः प्रेति युक्त ।

केनेषितां वाचमिमां वदन्ति।

चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति । 1–

कबीर दादू दयाल एवं अखा सर्वाधिक विवादाग्रस्त कवि है । आधुनिक विद्वानों ने उन पर विभिन्न दर्शनों का प्रभाव दिखाया है ।

डॉ. बडथ्वाल का कथन है " ये दार्शनिक न होकर आध्यात्मिक पुरुष मात्र है ।" 2–

अन्य स्थान पर उन्होंने "अद्वैत, भेदाभेद ,और विशिष्टा द्वैत की संस्थति को ध्यान में रखकर यह निष्कर्ष लिया जा सकता है कि कबीर का अद्वैत विचारधारा मानने वालों में प्रमुख स्थान था । 3–

बाबू श्याम सुंदर दास के मतानुसार कबीर अद्वैत वादी अथवा ब्रह्म वादी थे । 4– डॉ. भंडारकर उन्हें द्वैतवादी मानते है । 5– डॉ. एफ. इ. की के अनुसार कबीर विशिष्टाद्वैतवादी है । 6–

दादू दयाल के संदर्भ में डॉ. वासुदेव शर्मा को दार्शनिकता अथवा'आध्यात्मिकता ' जैसे रुढ़ शब्दों को छोड़कर संतो के विषय में चिन्तन धारा शब्द का प्रयोग ही अधिक उपयुक्त होता है । दादू की चिन्तन धारा का भी इसी दृष्टि से विवेचन करना उचित होगा । 7–

---

1:– केतोपनिषद 1/1

2:– हि. का. में निर्गुण संप्रदाय, प्राक्कथन, पृ.–3

3:– वही– पृ.–114

4:– क. ग्रं., भूमिका, पृ.–47

5:– वैष्णविज्म शैविज्म एण्ड माइनर रिलीजस कल्ट्स, पृ. 7077

6:– कबीर एण्ड हिज फोलोअर्स, पृ. 71

7:– संत कवि दादू और उनका पंथ, पृ. 144, शोध–प्रबंध प्र. दिल्ली–7 सं.1947

रवींद्र कुमार सिंह दादू दयाल को भक्त मानते है ,दार्शनिक नहीं । 1–

अखा को डॉ. योगेन्द्र त्रिपाठी ने अजात वादी माना है 2 तो डॉ. थूँठी नें उन्हें शुद्धाद्वैतवादी कहा है । 3 डॉ. उमाशंकर जोशी ने मध्यम मार्ग अपनाकर अखा के 'विचार पिंड' को गोड़वाचार्य के अजातवाद और शंकराचार्य के कैवला द्वैत से निर्मित किन्तु भक्ति या निर्गुणोपासना को शुद्धा द्वैत से प्रभावित माना है । 4 डॉ. रमण भाई पाठक निम्न पदों के आधार से यह मानते है कि अजात दर्शन की तरह अखा में भी किसी के जन्म मरण और बंधन –मोक्ष का स्वीकार नहीं है । 5–

त्यां ज्यम छे त्यमनु त्यम, थयुं गयुं कोइए नथी ।

(अखेगीता कठवु –38)

ना कोई मुआ ना जीवता ना ताहें आवन जावन ।

(अक्षयरस , शब्दातीत अंग पृ. 346)

वस्तुतः कबीर ,दादू दयाल एवं अखा का चिन्तन अनुभूतिजन्य था । लेकिन विद्वानों ने उनपर अनेक दर्शनो का प्रभाव तलाश किया है ।

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने संतो के दर्शन के संबंध में कहते है कि " निर्गुण पंथ के संतों के संबंध में यह अच्छी तरह से समझ रखना चाहिये कि उनमें कोई दार्शनिक व्यवस्था दिखाने का प्रयत्न व्यर्थ है । उन पर द्वैत–अद्वैत –विशिष्टा द्वैत आदि का आरेप करके वर्गीकरण करना दार्शनिक पद्धति की अनभिज्ञता प्रकट करेगा ।" 6–

---

1:– दादू काव्य की सामाजिक प्रसंगिता, पृ. 73 वा. प्र., प्रथम सं., 1988

2:– केवलाद्वैत इन गुजराती पोइट्री

3:– दी वैष्ण्व ऑफ द गुजरात

4:– अखाना, छप्प, 'आतम सूझ' , पृ. 23 एवं 33

5:– अखो एक स्वाध्याय, सा. प्र. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, पृ. 172, 1976 ई.

6:– हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 86

रेवेडेड अहमद शाह ने बीजक के आधार से यह निर्णय किया है कि "उनके उपदेश न तो वेदान्ताश्रित है ना सम्पोषक और ना ही सांख्य, 'न्याय व मीमासां पर आधृत । उनके विचार उनके मौलिक चितन के साक्षी है । 1– डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी उचित ही कहा है – " कबीर ने एक सत्य का अनुभव वे अपने नाम से कह गये "।

दादू ने भी उसी सत्य का साक्षात् किया और अपना नाम देकर उस पर अपनी भी साक्षी रख छोड़ी ।" 2–

उपर्युक्त विधान अखा के संदर्भ में भी अनुकूल है ।

रवीन्द्र कुमार सिंह के विचार भी दृष्टव्य है – " संतों के सिद्धान्त वस्तुतः स्वानुभूति पर आधारित होते हैं उनका अपना अनुभव ही उनके सिद्धान्तों का कारण बनता है । अनुभूति के सूक्ष्म सॉंचे में ढलकर ही उनके निजी विचार सिद्धान्तों के रुप में परिणत होते हैं । इसके लिए उन्हें कहीं इधर उधर भटकना नही पड़ता । वे तो मन ही मन स्वयं ही उन्हें अनुभूत होते हैं" ।3–

अतः स्पष्ट है कि प्रत्येक साधक के अपने निजी अनुभव होते हैं , और उन्हीं अनुभव जन्य विचारों को संत कविता के रुप में प्रस्तुत करते हैं । अतः

---

1:–**His taching is neithes vedanta nor Sankhya neigher Nyaya nor Mimonasa, but is based on original thinking of his own.-**
**The Bejah of Kabir, Page- 35**

2:– 'दादू' – लेखक– हजारी प्रसाद द्विवेदी, संपादित, ' विचार और वितर्क' से उद्धृत, संवत 2002, पृ. 116

3:–दादू काव्य की सामाजिक प्रसंगिता, पृ. 73, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 1988

कबीर दादू दयाल एवं अखा को किसी विचारधारा से प्रभावित मानना उचित नहीं है। कबीर दादू दयाल एवं अखा ने अपनी निम्न साखियों में स्पष्ट कह दिया है कि वे किसी की सुनी– सुनाई या शास्त्रों की पढ़ी हुई बात नहीं करते हैं, बल्कि अपने निजि और प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है केवल उसी का वे कथन करते है :

कबीर– मैं कहता हौं ऑखिन देखी, तु कहता कागद की लेखी।

मैं कहता सुरभावनहारी तू राखो उरजाई रे ।। 1–

दादू– दादू दयाल की निम्नलिखित उद्घोषणा इसे असन्दिन्ध रुप में प्रकट करती है :

दादू देखा दीदा सब कोई कहन शुनीदा।

आशिक यार अधर लख पाया ,हो गया दीदम दीदा।। 2–

अखा जी भी दूसरे शब्द में प्रत्यक्ष अनुभव को ही महत्व देते है ।

अनुभव पुरुष सागर ज्याहां, त्यांहां प्रगट मिले प्राणनाथ ।। 3

अन्य स्थान पर वे कहते है कि :

अखा अनुभवी गुरु भला, आडंबर गुरु नाहै । 4–

उपर्युक्त पदों से स्पष्ट है कि कबीर ,दादू दयाल एवं अखा का दर्शन स्वानुभूति मूलक है । उनका दर्शन शास्त्राश्रित पूर्वाग्रहग्रस्त नहीं है । वे सत्यासत्य निर्धारण में स्वानुभूति विचार को ही आधार मानते हैं ।

---

1:– कबीर साहब की शब्दावली, भाग 1, चितावनी और उपदेश , शब्द 78, पृ. 51, बेलबीडियर प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित

2:– दादू दयाल की बानी भाग 1, सॉच को अंग, साखी 118, बे. प्रे. इला. द्वारा प्रकाशित, सन् 1963–74

3:– अक्षयरस, साखियॉ, 3– सूझ अंग, साखी 6 संपादक कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह, म. स. वि. , बड़ौदा द्वारा प्रकाशित ,सन् 1963 ई.

4:– वही 4'अनभै अंग

संतो की विचार धारा मुख्यतः ब्रह्म,जीव, जगत एवं माया इन चार तत्वों पर आधारित है ।

अः:– ब्रह्म–

परमात्मा क्या है ? क्या वास्तव में कोई परमेश्वर है ? कौन–सी शक्ति इस ब्रह्माण्ड को सत्ता देकर नियम में चला रही है ? वह शक्ति जड़ है या चेतन ? यदि वह जड़ ही है तो किस प्रकार ब्रह्माण्ड में सूर्य ,चन्द्र तारे वगैरह नियम पूर्वक चल रहे है ? हमारा उस शक्ति के साथ क्या संबंध है ? यह संसार कहाँ से आया कब बना और किस प्रकार बना ? मनुष्य के सम्मुख ऐसे प्रश्न सदैव उठते रहते है।

ये सब प्रश्न काल और माया के अंदर है , इनका कोई उत्तर नहीं पर इसके बावजूद भी ये सवाल मन से हटते नहीं ।

परमात्मा दर्शनशास्त्र, पुस्तकों और वाद–विवाद द्वारा नहीं जाना जा सकता । कबीर दादू दयाल अखा आदि संतों के अनुसार उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर जानना है जो स्वयं अनुभव करना पड़ेगा। इस अनुभव के लिये पूर्ण गुरु की शरण लेनी पड़ेगी । गुरु ने स्वयं अनुभव किया है और सृष्टि रचना का सारा भेद एवं इसको बनाने वाला परमात्मा कैसे मिल सकता है वह केवल वे ही जानते है ।

बलिहारी अपने साहिब की ,जिन यह जुक्ति बताई ।
उनकी शोभा केहि बिधि कहिये, मो से कही न जाई ।। 1–

---

1:– कबीर साहब की शब्दावली, भाग 3, आदिबानी, पद 1, बेलबीडियर प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, पृ. 3 सन् 1990

भाई कोई सद्‌गुरु संत कहावै , नैनन अलख लखावै ।
डोलत डिगै न बोलत बिसरै , जब उपदेस दृढ़ावै ।
प्रान–पूज्य किरिया तें न्यारा, सहज समाधि सिखावै ।। 1–

कबीर साहिब अन्य स्थान पर कहते हैं कि आत्मिक ज्ञान रुपी पदार्थ मनुष्य बाहर ढूँढ़ता है और पा नही सकता । इसे पाने के लिये इसके भेद के ज्ञाता सद्‌गुरु का मार्ग दर्शन आवश्यक है ।

वस्तु कहीं ढूँढ़ै कही, केहि विधि आवै हाथ।
केहि कबीर तब पाइये , जब भेदी लीजै साथ ।।
भेदी लीन्हा साथ कर , दीन्ही वस्तु लखाय।
कोटि जनम का पंथ था , पल में पहुँचा जाय।। 2–

दादू दयाल जी का भी स्पष्ट कथन है कि गुरु से ही ज्ञान प्राप्त हो सकता है ।

दादू गुर गरुवा मिलै, ता थै सब गमि होइ।
लोहा पारस परसवाँ, सहज समाना सोइ।। 3–

सतगुरु मिलै तौ पाइये , भगति मुकति भंडार।
दादू सहजै देखिये, साहिब का दीदार।। 4 –

अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि हमको बनाने वाले ईश्वर का साक्षात्कार सत्‌गुरु ही करा सकते है :

---

1:– वही भाग 1, सदगुरु और शब्द महिमा, शब्द 5, साखी 1

2:– कबीर साखी संग्रंह, पृ. 5

3:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, गुरुदेव को अंग, साखी 47, बेलबीडियर प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित सन् 1963–74

4:– वही साखी 57

जिनि हम सिरजे सो कहां सतगुरु देहू दिषाइ ।
दादू दिल अरवाह का ,तहां मालिक ल्यौ लाइ ।। 1–

दादू साचा गुरु मिल्या ,साचा दिया दिषाइ ।
साचे सौ साचा मिल्या, साचा रहया समाइ ।। 2–

सतगुरु मिलै तो पाइये ,भगति मुकुति भंडार ।
दादू सहजै देषिये , साहिब का दीदार ।। 3–

दादू सोइ मारग मन गह्या , जिहि मारग मिलिए जाइ ।
वेद कुरानौ ना कह्या , सो गुरु दिया दिषाइ ।। 4

अखा जी भी कहते है । –

सदगुरु कारन मुक्ति का ज्युं भोग कारन है धन्य ।
ताथे सेवो सदगुरु ज्यों चाहो राम रतन ।। 5–

ज्युँ रत्न मीले रत्नागरे , त्युँ राम मिले गुरु पास ।
ताथे सेवो सदगुरु जे पूत दरिद्र करै नास ।। 6 –

---

1:– दादू दयाल, गुरुदेव को अंग, साखी 41, संपादक परशुराम चतुर्वेदी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित, संवत 2023 विकम

2:– वही साखी –52

3:– वही साखी – 56

4:– वही साखी –79

5:– अक्षयरस, साखियॉ , उपदेश अंग, साखी 24, संपादक कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि., बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई.

6:– वही साखी 25

गुरु हमें वास्तविकता दिखाता है । वे हमें परमात्मा के नामों के विवादों में नहीं फँसाते , बल्कि वे कहते हैं कि कोई भी वर्णनात्मक नाम परमात्मा का वर्णन नहीं कर सकता । यद्यपि देश ,काल और भाषा की भिन्नता के कारण हम एक ही राम को अनेक नामों से पुकारते है , पर परमात्मा का वास्तविक रुप सभी वर्णनात्मक नामों से परे अनामी है। वह मन और बुद्धि की सीमाओं से परे है । इसलिये मन–बुद्धि से परे केवल आत्मा द्वारा आन्तरिक अनुभव से वह जाना जा सकता है । परमात्मा को कोई उपमा नहीं दी जा सकती क्योंकि उसके समान कोई और नहीं है ।

संसार में अलग–अलग संप्रदायों के लोग अपने संप्रदायों में प्रतिपादित नाम को सच्चा और अन्य संप्रदायों द्वारा प्रतिपादित नाम को निकृष्ट मान कर आपस में कलह करते है। । लेकिन संत इस प्रवृत्ति का विरोध करते है। वे कहते हैं कि सभी नामों से एक ईश्वर का ही बोध होता है ।

एक राम देखा सबहिन मै कहै कबीर मन मांनां। 1–

हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोउ लड़े मरतु है , मरम कोइ नहिं जाना। 2–

कबीर साहिब फिर कहते है कि हिन्दू राम को श्रेष्ठ और मुसलमान खुदा को श्रेष्ठ कहते हैं लेकिन दोनों नामों को एक ही ब्रह्म के लिये मानकर नामों के झगड़े में नहीं पड़ते वही मर्म जान पाता है ।

हिन्दू मुये राम कहि ,मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीविता दुह में कदे न जाइ।। 3–

---

1:– कबीर ग्रंथावली, प्रयाग संस्करण, पद–54

2:–क. सा. की शब्दावली, भाग 1, शब्द 62, साखी 1, बे. प्रे. इला.सन् 1949 ई.

3:– कबीर ग्रंथावली, मधि कौ अंग, साखी 7, सं. बाबू श्यामसुदर दास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा

दादू दयाल भी कहते हैं कि राम के अनेक नाम है ,किन्तु इस विवाद में दादू पड़ना नहीं चाहते ,वे तो सिर्फ यही कहते हैं कि राम के सिवा कोई दूसरा है ही नही। जो कुछ सत्य है ,वह राम ही है ।

बाबा दूसर नांही कोई ।
येक अनेक नाव तुम्हारे,मोपे और न होइ।।
अलख इलाही एक तूँ , तूँ ही राम रहीम ।
तूँ ही मालिक मोहना, केसौ नॉव करीम ।।
सांई सिरजन हार तूँ , तूँ पावन तूँ पाक।
तूँ काइम करतार तूँ, तूँ हरि हाजिर आप ।।
रमितां राजिक येक तूँ,तूँ सारंग सुविहान।
कादिर करता येक तूँ, तूँ साहिब सुलितान।।
अविगत अलह येक तूँ, गनि गुसाई येक।
अजब अनुपम आप है, दादू नॉव अनेक।। 1–

अंत में हारकर दादू दयाल कहते हैं कि राम–सरीखा तो राम ही है , वह सर्वव्यापी है, और वह वैसा है ,बस है :

जैसा है तैसा नॉउ तुम्हारा, ज्यौं है त्यौ कहि साई ।
तू आपै जाणै आपै कौं ,तहँ मेरी गमि नाही।। 2–

---

1:– दादू दयाल ग्रंथावली, राग आसावरी, पद-20, परशुराम चतुर्वेदी, पृ. 406, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित, संवत 2023 वि.

2:– दादू दयाल की बानी , भाग–1 , हैरान को अंग, साखी 6, बे. प्रे. इला. द्वारा प्रकाशित, सन 1984 ई.

अन्य स्थान पर वे कहते हैं ::–

आए एकंकार सब ,सांई दिए पठाइ।
दादू न्यारे नाम घर ,भिन्न–भिन्न है जाइ।। 1–

अखा जी भी अन्य स्थान पर कहते हैं कि उस परमात्मा को कोई नाम नहीं है :

अखा गेबी रामकू नाम नहीं बहु नाम।
ढूँढ़त ठोर पाईये नहीं और सकल ठोर आराम।। 2–

आपे सौ गैबी आवाच्य। नाम वाकों क्यों धरुँ ?
बोलत बोलावे आपे ! जाने मै हि उच्चारुँ ।। 3–

अखा गेबी राम के अंग बिना बोहो रंग।
कलपीत नामु बोल दे असल नामना अंग।। 4–

कुरान मज़ीद में आता है कि अल्लाह–ताला के सब नाम एक जैसे पवित्र है । ये सारे नाम आदरणीय है । उसको अल्लाह कहो या रहमान ,उसके सब नाम प्रिय है । अल्लाह–ताला स्वयं इन नामों और महिमा से ऊपर है । 5–

---

1:– दादू दयाल ग्रंथावली, 29– नृवैरता को अंग, पृ. 273, नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित, वाराणसी, संवत 2023 वि., सं, परशुराम चतुर्वेदी

2:– अक्षयरस, साखियॉ, 50–गेबीअंग, साखी 10 सं. कुँवर चंद्र प्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा, द्वार प्रकाशित, सन् 1963 ई.

3:– वही, भजन, आपे सो गैधी अवाच्य

4:– वही साखियॉ, 50-गेबी अंग, साखी 10

5:– कुर्आन मजीद (6 : 100)

गुरु अर्जुन साहिब कहते है , चाहे कोई राम कहे या खुदा, गुसाई को पूजे या अल्लाह को , सब एक ही 'करन कारन करीम' है :

कोई बोलै राम, राम कोइ खुदाइ ।।
कोई सेवबै गुसईआ, कोई अलाहि ।।
कारण करण करीम । किरपा धरि रहीम ।। 1—

गुरु वाणी में भी आया है कि मालिक का नाम अकृत्रिम (निज) नाम है :

किरतम नाम केथे तेरे जिहवा ।। सतिनाम तेरा परा पूरबला ।। 2—

बाकी सब नाम कृत्रिम है , जो किसी न किसी सिफ़त या गुण विशेष के कारण रखे गये है , जैसे बनाने वाले का नाम कर्ता, रहम करने वाले का नाम रहीम आदि ।

गुरु गोविन्द सिह जी ने 'जाप साहिब' में हजार से अधिक नामों से उस परम पिता परमेश्वर की महिमा की है और साथ ही उसको अनामी भी कहा है : 'अनाम है' । 3— आप कहते हैं कि मैं उस परमात्मा को नमस्कार करता हूँ जिसका कोई नाम नहीं :'नमसतं अनामे' । 4—

परमात्मा की पहिचान उनके किसी भी वर्णनात्मक नाम के द्वारा नहीं हो सकती । परमात्मा का केवल अनुभव किया जा सकता है । इस अनुभव

---

1:— आदि ग्रंथ, राम कली , महल्ला—5, पृ. 885

2:— आदिग्रंथ, मारु, महल्ला—5, पृ. 1083

3:— जाप साहिब, पृ. 35

4:— वही, पृ. 4

अकथनीय और अवर्णनीय है । परमात्मा का कोई भी नाम परमात्मा की शक्ति का इशारा नहीं दे सकता । उनके दर्शन के आनन्द का वर्णन अवर्णनीय है । जिस प्रकार गूँगा मिठाई के स्वाद का आनन्द मन ही मन भोगता है ,उसकी अभिव्यक्ति नहीं कर सकताः

अविगत अकल अनूप देख्या, कहता कह्या न जाई।
सैन करै मन ही मन रहसै, गूँगै जांनि मिठाई।। 1—

अकथ कहानी प्रेम की की , कछु कही न जाई।
गूँगे केरी सरकरा बैठे मुसुकाई ।। 2—

कहै कबीर गूँगै की सैना, अमी महारस चाखै नैना।। 3—

संत दादू दयाल भी कहते हैं ::—

गूँगे का गुड कहूँ, मन जानत है खाइ।
त्यो राम रसाइण पीवतां, सो सुख कहया न जाइ।। 4—

केते पारिख पचि मुये, कीमति कही न जाए।
दादू सब हैरान है , गूँगे का गुड़ खाइ।। 5—

---

1:— कबीर ग्रंथावली , राग गौड़ी, पद—6, सँ. बाबू श्यामसुंदर दास

2:— वही, राग रामकली, पद 156

3:— कबीर साहब की ग्रंथावली, भा—1, चितावनी और उपदेश, शब्द—85, साखी 6, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित , सन् 1989 ई.

4:— दादू दयाल की बानी, भा—1, हैरान को अंग, साखी'14, बेलबीडियर प्रेस , इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित , सन् 1963—74

5:— वही— हैरान को अंग—4

केते पारिख जौहरी, पंडित ज्ञाता ध्यान।
जाणियां जाए न जाणियै ,का कहि कथिये ज्ञान।। 1—

अखा जी भी परमात्मा को रसना द्वारा व्यक्त करने की असमर्थता प्रकट करते हुए कहते हैं :

सांया तेरी साहबी ,बन्दे कही न जाय।
अखा अकल पग न टीके तो रसना कैसे गाय।। 2—

अखा गेबी राम की रसना काहे करे बात।
अंतर सी रेहे राम की सोही जीभुं आत।। 3—

केहेत अखो मुंगा की , शर्करा घट घुटे सो जाने सीहीरी भलसी ।। 4

बृहदारण्यक उपनिषद में भी दूसरे शब्दों में यही बात प्रकट की है । इस उपनिषद में ऋषि ने कहा है कि जिस प्रकार रेत से तेल निकालना और शराब से प्यास बुझाना असंभव है ,उसी प्रकार ब्रह्म को विद्याओं द्वारा प्राप्त करने की कल्पना व्यर्थ है । इस उपनिषद में एक छोटा सा विचार करने योग्य सूत्र आया है —'नेति—नेति'6— जिसे चार बार दुहराया गया है । इसका अभिप्राय है कि जो कुछ वर्णन किया जाता है वह ब्रह्म नहीं अर्थात् नाम रुप से परे जो हस्ती है ,वह ब्रह्म है । वह निर्गुण और अवर्णनीय होने के कारण इन आखों का विषय नहीं है तथा मन —वाणी की उस तक पहुँच नहीं।

---

1—: वही साखी—3

2:— अक्षयरस, साखियाँ, 24, हैरान को अंग, पद—1, सं कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बडौदा द्वारा प्रकाशित, 1963 ई.

3:— वही, 50—गैबी अंग, साखी—15

4:— वही संत प्रिया, साखी—23

6:— बृहदारण्यक, 2,3,6

कठोपनिषद में ब्रह्म को 'शब्द रहित' स्पर्श –रहित', रुप रहित, 'व्यय-रहित' गन्ध-रहित कहा है ।

अशब्दमस्पर्शमरुपमव्ययं तथारसं नित्यमगन्धवच्च यत् ।
आनाद्यनन्त महतः परं ध्रुवं निचाच्य तन्मृस्युमुखात्प्रमुच्चते ।। 1

गुरु नानक साहिब भी फरमाते हैं कि परमात्मा सोच–विचार सीमा में नहीं आ सकताः

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख बार । " 2–

संत कबीर भी कहते हैं कि निराकार प्रभु का वर्णन असंभव है :–

अलख निरंजन लखै न कोई,निरभै निराकार है सोई ।
सुनिं अस थूल रुप नहिं देखा, द्रिष्टि अद्रिष्टि छिप्यो नहिं पेखा ।।
बरन अबरन कथ्यौ नहीं जाई, सकल अतीत घट रहयो समाई ।
आदि अंत ताहि नहीं मघे, कथ्यौ न जाई आहि अकथै ।।
अपरंचार उपज नहीं बिनसै , जुगति न जानियै कथियै कैसे ।
जस करिये तस होत नहीं, जस है तैसा सोइ ।
कहत सुनत सुख उपजै, अरु परमारथ होइ ।। 3–

अन्य स्थान पर कबीर जी कहते हैं :

भारी कहौ तोबहु डरौ, हलका कहूं तो झूठ ।
मैं का जाणों राम कूं, नैनं कबहुं न दीठ ।। 4–

दीठा है तो कस कहूँ, कहया न हो पतियाइ ।
हरि जैसा है तैसा रहो ,तूँ हरिषि हरषि गुण गाइ ।। 5–

---

1:– कठोनिषद, 3–15

2:– नानक वाणी,–79

3:– कबीर ग्रंथावली, बड़ी अष्टपदी रमैणी, पद–12, सं बाबू श्यासुंदर दास

4:– वही, जर्णा को अंग, साखी–1 5:– वही, साखी–2

दादू दयाल का कथन है ::—

(दादू) ऐसा बड़ा अगाध है ,सूषिम जैसा अंग।
पुहप बास थैं पातला, सो सदा हमारे संग।। 1—

अखा जी दूसरे शब्दो में यही कहते हैं :

अजब कला उपजी अखा अंग लींग बीना एन।
नीरालंब अबिलंब नो समझत सेनु सेन।। 2—

अजब कला उपजी अखा ना पंथ ना पंथी गाम।
चंदन आया नीर मां तो काहा कुच मुकाम।। 3—

ज्याकुं रुप रंग न रेख ,सो तू जाण्य अकाल।
निर्गुण सो गुन रुप भयो है ,लोक सकल लोक पाल।। 4—

वह आदि शक्ति एक अनन्त तथा अविनाशी है । विश्व के सारे धर्मो की धर्म पुस्तकों में जहॉ भी इसका उल्लेख हुआ है उसको किसी एक जाति धर्म या देश का नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि का परमात्मा कहा गया है तथा बताया है कि उस परमात्मा से सब कुछ प्रकट हुआ । वह सर्वव्यापी—शक्ति है ,कोई स्थान, कोई वस्तु, कोई भी सजीव या निर्जीव उसकी शोभा से शून्य नहीं तथा इसके द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि के काम हो रहे हैं ।

---

1:— दादू दयाल की बानी, भा—1, 4—परचा को अंग, साखी—305, बे. प्रे इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

2:— अक्षयरस, साखियाँ, 51—महाकला अंग, साखी—2, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, 1963 ई.

3:— वही साखी—4

4:— वही, धुआसा, राग काफीनी

परमात्मा सृष्टि के तिनके–तिनके में उसी प्रकार समाया हुआ है कि जिस प्रकार आत्मा शरीर के रोम–रोम में रची हुई है तथा शरीर चला रही है । आत्मा के निकल जाने पर शरीर राख का ढ़ेर हो जाता है । इसी प्रकार इस सृष्टि में से उसकी सत्ता खिंच जानें पर यह सृष्टि नष्ट हो जाती है । आकाश , जिसमें सब सृष्टि की बनावट हुई , और प्राण जो सारे विश्व को चला रहे है, उस परमात्मा की बनाई हुई ताकते हैं । वह संपूर्ण सृष्टि का कर्ता ,धर्ता और हर्ता है।

यजुर्वेद में कहा गया है कि उस परमेश्वर ने सारे संसार को पैदा किया है : 1–
वह सबका स्वमी है । 2–
वह अकेला ही इस सृष्टि को पैदा तथा नाश करने वाला है । 3–
ऋग्वेद में भी कहा गया है –"उस परमात्मा की प्रशंसा करो जिसने सारी दुनिया बनाई " । 4–

भगवद् गीता में कहा गया है –"है अर्जुन ! जो सारी हस्तियों की उत्पत्ति का मूल है वह मैं ही हूँ । जो स्थावर या जंगम है ,वे मेरे बगैर नहीं ।

यच्चापि सर्वभूतानां बजिं तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरं।। 5–

---

1:– यजुर्ववेद, 29–9

2:– यजुर्ववेद, 13–4

3:– श्वेताश्वर उपनिषद, अध्याय–2, मंत्र–3

4:– ऋग्वेद,–

5:– गीता, अध्याय 10, श्लोक–39

अन्य स्थान पर भगवान श्री कृष्ण कहते हैं। :—

" मेरे से ही चलता है । यह समझ कर बुद्धिमान लोग प्रेम सहित मुझे स्मरण करते हैं ::"

अहं सर्वस्य पंभवो मत्तः सर्व प्रवर्तते।

इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।। 1—

बाइबिल में यही कहा गया है —

" आदि में शब्द था और शब्द परमात्मा था । वह पहले परमात्मा के साथ था ,सब चीज़ें उसी ने बनाई ,कोइ भी चीज़ उसके बगैर प्रकट नहीं हुई। 2—

कुरान शरीफ़ में कहा गया है ::—

"उसी मालिक कुल ने सब जानदार इस दुनिया में फैलाये है । 3—

अमेरिका के प्रसिद्ध फिलासफ़र मि. विल डुरेन्ट जड़ पदार्थ को चलाने वाली एक चेतन शक्ति के बारे में वर्णन करते हैं।

"स्थूल पदार्थ के अंतर में एक ऐसी शक्ति है जो उसे शक्ल और ताकत देती है , पर जो स्वयं स्थूल नही है और जिसमें अपने आप ही ताकत और जीवन है । यह सूक्ष्म और गुप्त, फिर भी सदैव प्रकट जिन्दगी का जौहर (सार तत्व) ही हर एक चीज का जौहर है । 4—

प्रसिद्ध दार्शनिक ,हरबट स्पैन्सर ने स्पष्ट कहा है कि —"इस दुनिया में एक अनन्त और अविनाशी शक्ति मौजूद है , जिसमें हर एक वस्तु प्रकट हुई है। 5 —

---

1:— वही, 10—4

2:— जोन 1 : 1—4

3:— सूरत बकर की 30 वीं रफूह

4:— दि मेंशन्स ऑफ फिलासफी, पृ. 67

5:— नान्टीन्थ सेंचुरी (नामक मासिक पत्र) जनवरी, सन् 1884 का अंक

कबीर, दादू दयाल एवं अखा के अनुसार भी परमात्मा सर्वव्यापक ,सर्वाधार, सृजन हार, निश्चल, अविनाशी, पतित-पावन ,अगम-अगोचर अनादि, अनन्त, और निर्मल चेतन है । संसार में जो कुछ दिखाई देता है वह उस स्वामी का प्रकाश है ।

कबीर साहिब का कथन है :

अविल अलह नुरु उपाइआ, कुदरति के सभ बंदै ।।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ, कउन भले को मंदे ।। 1–

मुसलमान का एकु खुदाइ ।। कबीर का सुआमी रहिया समाई ।।2–

अबिगत अपरंपार ब्रह्म ,ग्यान रुप सब ठाम।
बहु बिचारि करि देखिया, कोइ न सारिख राम।। 3–

एक अन्य स्थान पर कबीर जी कहते हैं :

अंजन अलप निरंजन सार, यहै चीन्हि नर करहु विचार।।
अंजन उतपति बरतनि लोई, बिना निरंजन मुक्ति न होई।।
अंजन आवै अंजन जाइ, निरंजन सब घटि रहयो समाइ।।
जोग ध्यान तप सबै बिकार, कहै कबीर मेरे राम आधार।। 4–

---

1:– आदि ग्रंथ, विभास प्रभाती, कबीर जी, पृ. 1349

2:– आदि ग्रंथ भैरव, कबीर जी, पृ. 1160

3:– कबीर ग्रंथावली, रमैनी–21, सं. बाबू श्यासुंदर दास

4:– क. ग्रं. राग मैरु, पद–337

संत दादू दयाल भी परमात्मा के संबंध में कहते हैं :—

दादू अलष अलाह का ,कहुं कैसा है नूर।
दादू बेहद हद नहीं ,सकल रहया भरपूर।। 1—

वार पार नहीं नूर का, दादू तेज अनंत ।
कीमति नहीं करतार को, अैसा है भगवंत।। 2—

प्रम तेज परापरं,प्रम जोति परमेश्वंर।
स्वयं ब्रह्म सदई सदा ,दादू अविचल अस्थिरं।। 3—

अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि संसार का सृजन करने वाला ही समर्थ है:

(दादू) सिरजन हारा सबन का ,ऐसा है समरत्थ।
सोई सेवग है रहया, जहँ सकल पसारै हत्थ।। 4—

घनि—घनि साहिब तू बड़ा, कौन अनूपम रीति।
सकल लोक सिर साइयाँ , है करि रहया अतीत।। 5—

(दादू) सर्ग भवन पाताल मधि ,आदि अंत सब सिष्ट।
सिरिज सबन कौ देत है, साई हमारा इष्ट।। 6—

---

1:— दादू दयाल, पीव पिछावण कौ अंग, साखी—21, सं. परशुराम चतुर्वेदी, नागरी प्रचारिणी सभा, सं. 2023 वि. पृ. 219

2:—वही, साखी—20

3:— वही, साखी—23

4:— दादू दयाल की बानी, भाग 1, बेबास को अंग, साखी 23 बे. प्रे. इला. द्वारा प्र. सन् 1984

5:— वही , साखी—24 6:— वही साखी—6

अखा जी परमात्मा की विराटता के संबंध में कहते हैं —

ज्याकुं रुप रंग न देखा ,सो तू जाण्य अकाल ।
निगुर्ण सो गुन रुप भयो है लोक सकल लोक पाल ।। 1—

पंच—पंच की पक्ष में ,देख आप उपावन हार ।
अग्रे आकाश उतपत्य लय पावे , आप में आप विस्तार । 2—

मानस में तुलसी दास जी का कथन है :—

उमा राम की भृगुटी बिलसा । होई विस्व पुनि पावइ नासा ।। 3—

सोइ सच्चिदानन्द घन रामा । अज विज्ञान रुप बल धामा ।।
व्यापक ब्याप्य अखंड अनंता । अखिल अमोध सक्ति भगवंता ।।4—

परमात्मा स्वामी या हरिराय अनन्त तथा अपार चेतना का भण्डार है , प्रेम और भंडार का अथाह सागर है इसकी बहुत सी कलाऍं है जिनके जिम्मे रचना को बनाने तथा सँभालने का कार्य है ,उन्हें पुरुष कहा जाता है , इसलिये परमात्मा को परम पुरुष कहा जाता है । इन कलाओं में एक काल पुरुष है जो रचनात्मक कला है इसकी सृष्टि का समय अथवा काल निश्चित है जिसके बाद वह नष्ट हो जाती है , इस लिये काल पुरुष कहा जाता है । यह त्रिगुणत्मक रचना का आधार है । अनगिनत ब्रह्मांड है । एक एक ब्रह्मांड की संभाल एक—एक ब्रह्मपुरुष के हवाले है प्रत्येक ब्रह्म पुरुष की तीन—तीन

---

1:— अक्षयरस, धुआसा, 1—राग काफीनी, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह , म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई.

2:— वही , राग काफिनी

3:— मानस, 6—34 (ख) 4

4:— मानस, 7—71 (ख) —2

कलाएँ (देवता) ब्रह्मा, विष्णु और महेश है जो बनाने , पालन करने और संहार करने का कार्य करते हैं । ये सब काल पुरुष के अंश माने गये हैं जो स्वयं अकाल पुरुष के आधार पर है । यह सब रचना काल के अधिकार में है ।

वेदों में काल–पुरुष की बहुत महिमा आई है । अथर्ववेद के काल सूक्त आया है :

" काल ने सृष्टि की रचना की काल में ही सूर्य का उदय होता है ,काल में सब जीव है । "1– इसी काल ने जीवों को उत्पन्न किया है इसी ने जीवों को घेर रखा है । 2–

कबीर साहब भी जीव को सावधान करते हुये कहते हैं कि काल तेरे ऊपर खड़ा हुआ है । इसके अधिकार क्षेत्र से केवल प्रभु ही बाहर है ,इसलिये जाग:

काल सिहणै यौं खड़ा, जागि विचारे म्यंत।
रांम सनेहरी बाहिरा, तू क्यूं सोवै नच्यंत।। 3–

कबीर पल की सुधि नहीं ,करै काल्हि का साज।
काल अच्यंता झड़ेपसी, ज्यूं तीतर को बाज।। 4–

कबीर कहा गरबियौ काल गहैं कर केस।
न जाणें कहां मारिसी, कै घर कै परदेस।। 5–

---

1:– 19 वां काण्ड, सूक्त–53,मंत्र'6

2:– अथर्ववेद, 19वां काण्ड, सूक्त–53, मंत्र–4

3:– क. ग्रं. , लौ कौ अंग, साखी–3, सं. बाबू श्यासुदर दास

4:– वही साखी–6

5:– वही, साखी–19

दादू साहिब स्पष्ट कहते है —

काल कीट तन काठ कौ , जुरा जनम कूँ खाइ।
दादू दिन–दिन जीव की अव घंटंती जाइ।। 1–

काल गिरासै जीव को , पल पल साँसै साँस।
पग–पग माहै दिन घड़ी ,दादू लखै न तास ।।2–

(दादू) काल हमारे कंध चढ़ि सदा बनावै तूर।
काल हरण करता पुरिष क्यों न संभाले सूर।। 3–

काल की सूझै कंध पर , मन चितवै बहु आस।
दादू जिव जाणै नहीं, कठिन काल की पास।। 4–

अखा जी भी काल का सत्ता का स्वीकार करते हुये कहते है :

जे धरी आव्यो भौतिक–काय–देव नर नाग कहयो नव जाय ,
काळसत्तामां नें ताहां खरो, एता मन्य काढो कांकारो।
मन'वचन कर्म हरिमां ढोळ, अखो समझ्यो अंशे सोळ। ।5

---

1:– दादू दयाल की बानी, भाग 1, काल को अंग, साखी–13, बेलबीडियर प्रेस, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984

2:– वही, साखी–14

3:–वही, साखी–3

4:– वही साखी–2

5:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–1, 51-फूटकल अंग, दोहो–632, स्वाती प्रिंटिंग प्रेस ,, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1988

यह काल और अकाल दोनों खसम (पति–परिपूर्ण) के बनाये है इनके हाथों में रचना का विस्तार कार्य सौंपा गया है ::

कालु अकालु खसम का कीना,
इहुं परपंचु बधावनु।
कहि कबीर ते अंते मुकते,
जिन हिरदै राम रसाइनु।। 1–

रावण को समझाते हुये हनुमान जी कहते हैं कि जो काल देवता , राक्षस और समस्त चराचर को खाने वाला है , वह भी राम से बहुत डरता है । ऐसे राम से बैर करना ठीक नही ::–

जाकें उर अति काल डेराई। जो सुर–असुर चराचर खाई।
तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै । 2–

विभीषण भी रावण को समझाते हुये कहते हैं कि राम कोई साधारण मानवी राजा नहीं है ,बल्कि वे समस्त विश्व के स्वामी और काल के भी काल है।

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला।। 3–

अर्जुन देव जी भी कहते है ::

खंड पाताल दीप सभि लोआ।
सभि कालेवसी आपि प्रभिकीआ।। 4–

---

1:– आदि ग्रंथ, मारु, कबीर जी, पृ.–1104

2:–मानस, 5–21–5

3:– मानस, 5–38–1

4:– आदि ग्रंथ, पृ. 1076

अतः संतो के अनुसार 'अकाल—मूरती' वह अकाल है काल और समय के प्रभाव से रहित है । काल के तीनों भाग 'भूत, वर्तमान, और भविष्य है , इनकी सीमा में सकल संसार बँधा हुआ है इसके;(काल) अंदर ही सबका आदि ,मध्य, और अंत होता है । पर परमात्मा इसकी केंद्र से परे है । वह अकाल है , अनादि और अनन्त है क्योंकि उसका कोई आदि और अंत नहीं । वह सदैव एकरस है । देश ,काल और माया से परे है । सबके सिर पर तो काल है पर वह अकाल है ।

## —::राम नाम से तात्पर्य::—

कबीर दादू दयाल ,अखा आदि संतों के अनुसार स्वामी या मालिक काल अकाल से परे है उनके राम विष्णु के अवतार नहीं है । उनके राम पूर्ण परमात्मा के रुप में उपस्थित है जिनके अंश मात्र से अनेकों ब्रह्मा, विष्णु ,और शिव की उत्पत्ति होती है । संतों के राम अनादि, अनन्त , अखंड और प्रकृति के सभी गुणों से परे है , जिनका ध्यान परम तत्व को जानने वाले किया करते है । इस राम के अंश मात्र से ही अनेकों ब्रह्मा, विष्णु और शिव उत्पन्न होते हैं । पर ऐसी महिमा वाले राम अपने भक्तों के प्रेम के वश में होते है । संतों के राम में अनन्त कोटि सरस्वती की बुद्धिमत्ता , अरबों ब्रह्मा की सृष्टि —रचना की निपुणता, अरबों विष्णु के विश्व पालन की क्षमता और अरबों शिव के विश्व —संहार की शक्ति है —

जौ जाचौ तो केवल रांम , आंन देव सूं नाहीं काम ।।
जाकै सूरिज कोटि करै परकास, कोटि महादेव गिरि कविलास ।।
ब्रह्मा कोटि बेद ऊचरैं, दुर्गा कोटि जाकैं मरदन करै ।।
कोटि चंद्रमां गहै चिराक, सुर तेतीसूं जीमैं पाक ।।
नौग्रह कोटि ठाढे दरबार, धरमराइ पौली प्रतिहार
कोटि कुबेर जाकै भरे भंडार, लछमी कोटि करैं सिंगार।
कोटि पाप पुनि ब्यौहरैं, इन्द्र कोटि जाकि सेवा करैं ।
जगि कोटि जाकै दरबार, ग्रंध्रप कोटि करै जैकार।
बिद्या कोटि सबै गुंण कहैं, पारब्रह्म कौ पार न लहैं।
बासिंग कोटि सेज बिसतरै , पवन कोटि चौबारे फिरैं ।
कोटि समुद्र जाकै पणिहारा, रोमावली अठारह भारा ।।
असंखि कोठि जाकै जमावली, रांवण सैन्या जाथैं चली।

सरसंबाह के हरे परांण, जरजोधन धाल्यौ खैं मांन।।
बावन कोटि जाकै कुटवाल , नगरी–नगरी खेत्रपाल।
लट छूटि खेलैं बिकराल, अनत कला नटधर गोपाल।।
कंद्रप कोटि जाकै लांघन करै , घट–घट भीतरि मनसा हरैं।
दास कबीर भजि सारंगपान, देहु अभै पद मांगौं दान।। 1–

एक स्थान पर कबीर कहते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु जिस प्रभु का ध्यान करते हैं वह प्रभु अगम अपारा है ::–

निगम नेंति जाके गुन गावै, संकर जोग अधारा।
ब्रह्मा, बिस्नु जेहि ध्यान धरतु है , सो प्रभु अगम अपारा।। 2–

धरनि आकास ऊधर जिनि राखी, ताकी मुगधा कहै न साखी।
सिव विरंचि नारद जस गावैं, कहै कबीर वाकौं पार न पावै।। 3–

कबीर राम की अनन्यता का वर्णन करते हुये कहते है ::

कितेक सिव संकर गए ऊठि,
राम संमाधि अजहूँ नही छूटि।। टेक।।
प्रलै काल कहू कितेक भाष , गये इन्द्र से अगिणत लाष।
ब्रह्मा खोजि पर्‌यौ गहि नाल, कहै कबीर वे राम निराल। 4–

ब्रह्मा भी अदि नाम प्राप्त न कर सके , वे चार वेद में अटक गए:

---

1:– क. ग्रं. , राग भैरु, पद–340, सं. बाबू श्यामसुंदर दास
2:– क. सा. की शब्दावली, भा–1, सदगुरु और शब्द महिमा, शब्द–10, साखी'3, बे. प्रेस इलाहाबाद, द्वारा प्रकाशित, सन् 1989 ई.
3:– क. ग्रं. , राग भैरुं , पद–335, सं. बाबू श्यामसुंदर दास
4:–वही, राग गौड़ी, पद–35

अवगत पुरुष चराचर ब्यापै, भेद न पावै कोई।
चार वेद में ब्रह्मा भूले , आदि नाम नहि पाई ।। 1–

ब्रह्मा, विष्णु, एवं महेश्वर भर्म में पड़े हुए है –
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर देवा, परे भर्म के भेसा।
जुगन–जुगन हम आइ चिताये, सार सब्द उपदेसा।। 2–

संत दादू दयाल भी कहते है कि ब्रह्मा, जोगी, पैगम्बर, मुल्ला उस परमात्मा को नहीं जानते:

अविगतकी गति कोइ न लहै । सब अपना उनमान कहै ।।
केते ब्रह्मा बेद बिचारै, केते पंडित पाठ पढ़ैं।
केते अनभै आतम खोजै, केते सुर नर नॉव रटैं।।
केते ईसुर आसणि बैठे, केते जोगी ध्यान धरैं।
केते मुनियर मन कूँ मारै, केते ज्ञानी ज्ञान करै।।
केते पीर केते पैगम्बर, केते पढ़े कुराना।
केते काजी केते मुल्ला, केते सेख सयाना।
केते पारिख अंत न पावैं, बार–बार कुछ नाहीं।
दादू कीमति कोइ न जानै, केते आवै जाहीं।। 3–

---

1:– कबीर साहब की शब्दावली, भा–3, शब्द–9, साखी–3, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित , इलाहाबाद , सन् 1989

2:– वही, शब्द–8, साखी–1

3:– दादू दयाल की बानी, भा–2, राग आसाबरी, पद–245, पृ.–43 , बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद, सन् 1984

अखा जी कहते है कि जितने अवतार हुए वे माया से बच न पाए::

ब्रह्म कवच पहेन्ये बिना, काल लताड़े को वच्यो?
वच्यो ना शिव ,ब्रह्माय, उडायण नवग्रह तारा,
शेष गणेश ,दिनेश, यक्ष,किन्नर, नर सारा।
इंद्र ,चंद्र, नरेंद्र, ठोर दिवी के केत्ते,
वीर, दश दिकपाल, जोहर, पेगम्बर जेत्ते।
जे धरी आयो काया सो सब माया संग रच्यो ।। 1—

अतः संतों का स्वामी या परमात्मा राम, कृष्ण ,आदि की तरह ऐतिहासिक व्यक्ति न होकर देश और काल से परे वह परात्पर पुरुष था , जिसकी शक्ति मत्ता और सार्वभौम रुप—रेखा में कभी भी कोई अन्तर आने की संभावना नहीं हो सकती थी।

राम कथा की सबसे प्राचीन रचना वाल्मिकी रामायण में राम को केवल विष्णु का अवतार बताया है ।और देवताओं से न मारे जाने योग्य रावण के वध के लिये और लोक कल्याण के लिये दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ समय विष्णु को अवतार लेने की प्रार्थना की गई है ।

त्यां नियोक्ष्यामहे विष्णो लोकानां हितकाम्यया।
तत्र त्वं मानुषो भूत्वा प्रवृद्धं लोककष्टकम्।
अवध्यं देवेनै विर्ष्णो समरे जाह रावणम्।। 2—

मंदोदरी भी राम को विष्णु का अवतार बताती है ::—

मानुषं वपुरास्थाय विषु: सत्य पराक्रमः। 3—

---

1:— अक्षयरस, कुँडलियाँ, पद'19, सं. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित ,1963 ई.

2:— वाल्मीकि रामायण, 1.15.18, 20, 21,

3:— वाल्मीकि रामायण, 1. 15. 18. 20, 21

अर्थात मनुष्य का शरीर धारण किये हुये ये सच्चे पराक्रम वाले विष्णु है।

इसके अतिरिक्त अन्य उदाहरण भी वाल्मिकी रामायण में मिलते है। 1– आध्यात्म रामायण में भी राम को विष्णु का अवतार बताया गया है ।

राम हि विष्णुः पुरुषः पुराणः 2–

अर्थात राम तो पुरातम पुराण विष्णु है ।

संतों के राम वाल्मिकी और आध्यात्म रामायण में वर्णित विष्णु के अवतार नहीं है । संतों ने जहाँ भी कही 'राम ' का प्रयोग किया है तब उसका तात्पर्य अवतारी पुरुष राम से न होकर सत्य पुरुष निरंकार की ओर है । कबीर निम्न पद में स्पष्ट कहते हैं :

नां जसरथ धरि औतरि आवा। नां लंका का राव सतावा।।
देवै कोखि न औतारि आवा। ना जसवै लै गोद खेलावा।।
नां को ग्वालन कै संगि फिरिया। गोबरधन ले ना कर धरिया।।
बांवन होइ नहीं बलि छलिया। धरनीं बेंद लै न ऊधरिया।।
मंडक सिलिगराम न कोला। मच्छ कच्छ होइं जउहिं न डोला।।
बद्री बैसि ध्यांन नहिं लावा। परसुराम है खत्री न सतावा।।
द्वारावती सरीर न छांड़ा। जगन्नाथ लै पिंड न गाड़ा।।
कहै कबही विचारि करि ,ए ऊले ब्यौहार।।
याही तै जो अगम है , सो बरति रहा संसार।। 3–

---

1:– वाल्मीकि रामायण, 1.75.1, 1.76.12, 1.1.4 आदि

2:– आध्यात्म रामायण, 7.6

3:– क. ग्रं. , बारह पदी रमैणीं, पद–40, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, वाराणसी नागरी प्रचारिणी सभा

एक स्थान पर कबीर जी कहते हैं कि दस अवतार लेने वाले विष्णु परमात्मा की धुन को प्राप्त न कर सके :

दस औतार कृष्न लें थाका, कुरम बहुत सुख पाई।
समुझि न परो वार पार लों ,या धुनि कहँ तें आई ।। 1—

संत दादू दयाल के राम भी अलख, अनादि, एवं अविनाशी है , विष्णु के अवतार राजा राम नही है :

माया रुपी राम कूँ , सब कोई ध्यावै।
अलख आदि अनादि है, सो दादू गावै।। 2—

(दादू) जिन मुझ कूं पैदा किया, मेरा साहिब सोइ।
मैं बन्दा उस राम का , जिन सिरज्या सब कोई ।। 3—

जामै मरै सो जीव है , रमिता राम न होइ।
जामण मरण थै रहित है , मेरा साहिब सोइ।। 4—

ब्रह्मा का वेद बिस्नु की मूरति, पूजै सब संसार।
महादेव की सेवा लागे, कहँ है सिरजन हारा।। 5—

---

1:— क. सा. की शब्दावली, भाग—3, महिमा शब्द, शब्द—3, साखी—5 बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित इलाहाबाद, सन् 1949 ई.

2:— दादू दयाल की बानी, भा—1, माया—140 बे. प्रे द्वारा प्र, इला, 1963—74

3:— वही, जीव पिछावण को अंग, साखी—9

4:— वही, साखी—15

5:— वही, माया—141

माया बैठी राम है कहै मैं ही मोहनराइ ।
ब्रह्मा विस्नु महेस लौं ,जोनी आवै जाइ ।। 1–

अखा जी इस तथ्य को हमारे सामने लाते हैं :

दशरथ पहलो हतो जे राम, नंद वासुदेव पहेलुं कृष्ण नाम।
चोवीसे तेहेमांथी थया, पण कहींए आव्या नव गया,
अविनाशी लहे ते तहां संत, कारण नहिं अखा दरशन पंथ। 2

सकळ तीरथनुं तीरथ ए सदगुरु देवना देवः
धन्य–धन्य ए नर–नारने करे मन कर्म–वचनगुरुनी सेव।
ब्रह्मा लिए अति भामणां, शिव–सनकादिक गाय,

विष्णुने वल्लभ घणा रे,महिमा मुखे कहयो न जाय।। 3–

---

1:– वही, साखी 143
2:– अखानी काव्यकृतियों–खण्ड1, छप्पा, 42'संत अंग, छप्पा– 469, स्वाती प्रेस , अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित सन् 1988 ई.
3:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड 2, पद,सागुरु महिमा अने संत महिमाना, पद, 46 पृ. 31, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1988 ई.

## –::परमात्मा से हमारा संबंध::–

परमात्मा चेतन का भंडार है ,वह विचार–स्वरुप है तथा अक्ल का खजाना है वह प्रेम और दया का भंडार है ,हम अंश है , वह अंशी है । जिस तत्व से हमारी आत्मा बनी है उसी तत्व के भंडार को परमात्मा कहते है । हम चेतन तत्व की किरण है तो वह चेतन तत्व का सूर्य है । हर एक अंश का अंशी होता है । आत्मा परमात्मा का अंश है ।

कहु कबीर इहु राम की अंसु ।। 1

कबीर यहु तौ एक है पड़दा दींया भेष ।
भरम–करम सब दूरि करि सबहीं मांहि अलेष ।। 2

दादू:– आतम सो परआत्मा, परगट आणि मिलाइ ।। 3

ज्यूं दरपन में मुख देखिये , पानी में प्रतिब्यंब ।
ऐस आतम राम है , दादू सबही संग ।। 4–

अखा भी जीव और शीव की एकता को स्वीकार करते है :

जीव–शिव एक छेरे, जो जुए जीवनी जाल । 5–

---

1:– आदि ग्रंथ , राग गौड़, पृ. 871

2:– क. ग्रं. भैष कौ अंग, साखी–18 सं. बाबू श्यामसंदर दास

3:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, गुरुदेव 43, बे. प्रे. इला. द्वारा प्रकाशित 1984 ई

4:– वही, विचार 3

5:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड 2,पद–103, पृ. 68 स्वाती प्रे. अह.द्वारा प्र. 1988

तुं हि तुं हि तुं हि राम ! निश्चे कीजे आपते !
पिता को अंश है पूत अन्य नाही बापतें । 1—

पुरानीं बाइबल में बहुत सुंदर संकेत मिलता है कि आप गतिहीन हो जायें तो आपको परमात्मा का ज्ञान हो जाएगा::

**Be still, and know that I am God. (psalams,46:10)**

## —::परमात्मा—संतो की दृष्टि में::—

संत जन द्वैत—अद्वैत में नहीं मानते। उसे वे हकीकत की दृष्टि से देखते है क्या केवल एक का मान लेना ही अद्वैत है ? यद्यपि विचार पूर्वक देखे तो एक को मानने में तीन की सूरत नज़र आती है ।

1—मानी जाने वाली वस्तु

2—मानने वाला मनुष्य और

3—उसको मानना ।

जहाँ तीन का भाव है वहाँ अद्वैत कैसा ? अद्वैत को तर्क द्वारा प्रमाणित करने वाला अद्वैत का खण्डन करता है ।

जब एक ही 'एक' है तो एक में 'एक' के बारे में बात चीत नहीं हो सकती । कोई भी बात चीत तब ही हो सकती कै जबकि दो उपस्थित हों , एक दूसरे को सुनाए , चखें , सूँघें । यदि केवल एक ही हो तो कौन सुने और कौन चखे, कौन सूँघे और कौन कहे ? इसलिए कबीर , दादू दयाल , अखा आदि संतों ने अद्वैत की वास्विकता की ओर ध्यान आकर्षित किया है ।

कबीर साहिब फरमाते है :':
एक कहौ तो है नहीं, दूजा कहौं तो गारि।
जैसा रहै तैसा रहै ,कहै कबीर बिचारि।। —

अर्थात एक तो वह है नहीं, दो कहना उसे अपशब्द कहने के समान है । वह जैसा है वैसा ही है इसके सिवाय इसको कुछ नहीं कहा जा सकता ।

---

1:— अक्षयरस, भजन, 19 तूंहि तूंहि, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई.

दादू– एक कहूँ तो दोइ है ,दोइ कहुँ तो एक।
यौं दादू हैरान है ,ज्यौ है त्यौ ही देख।। 1–

अखा–एक तो अव्वल था हि था,
और सार चाह्या, तब दुई कीतीः
छाना सो परगट हुवा,
तबतें आगे दूइ दीती।
येक सो दो ,ओर दो एकी ज,
जहां जैसा व्हां तूँ ज मीठा।
खालेक खलक आपे हि,
अखा अग्नि सो हि दीपक दीठा।। 2–

दादू– न तहाँ चुप नहिं बोलणाँ, मैं तैं नाहीं कोइ।
दादू आपा पर नहीं ,न तहां एक न दोइ।। 3–

पारब्रह्म का स्वरुप समझते हुये कबीर जी कहते हैं कि उसे मुख और माथा नहीं है ,और न जिसका कोई रुप है , वे तो सुमन –सुगन्ध से भी पतला है , वह ऐसा अनुपम तत्व है :

जाकै मुँह माथा नहीं , नहीं रुपक रुप।
पुहुप बास थै पतला, ऐसा तत्त अनूप।। 4–

---

1:– दादू दयाल की बानी, भाग 1, हैरान को अंग , साखी–24, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित , इलाहाबाद , सन् 1984 ई.

2:– अक्षयरस, झूलड़ा, पद'73, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित सन् 1963 ई.

3:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, हैरान कौ अंग, साखी–24 बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद सन् 1984 ई.

4:– कबीर ग्रंथावली, जीव पिछावण को अंग , साखी –4 सं. श्यामसुंदर दास

दादू– देखि दिवाने है गये, दादू खरे सयान।
वार पार कोइ ना लहै, दादू है हैरान।। 1–

(दादू) करण हार जे कुछ किया, सोई हूँ करि जाणि।
जे तूँ चतुर सयाना जानराइ, तौ याही परवाणि।। 2–

यहाँ मन वाणी और बुद्धि का अधिकार नहीं। जिस समय वह अपने आप में गुप्त था , तब न एक था और न दो, न उसका कोई रुप था , न रंग। वह क्या था , वर्णन नहीं किया जा सकता है । उस गुप्त का यदि वर्णन हो सकता है तो वह केवल उसके प्रकट होने पर ही हो सकता है । गुप्त हालत में वह अलख था, न वह सर्व शक्तिमान था न कि प्रकृति ओर न समर्थ था, न वहाँ खलिक(सृष्टि कर्ता) था न खलकत (रचना थी , न मखलूफ 'सृष्टि ' थी।) इसका कुछ अनुमान सुषुप्ति की हालत के द्वारा लग सकेगा । इसी अनामी पद को संतों ने अपना आदर्श बनाया है । उस मालिक–कुल अथवा अनामी पुरुष को संतों की वाणी में वडपुरुख ,सुआमी, आदि–निरंजन और निरंकार कहकर वर्णन किया गया है ।

कबीर कहते है ::–

अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड्डु दीना मीठा।।
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजन डीठा ।। 3–

न ओहु बढ़े न घटता जाइ।।
अकुल निरंजन एकै भाइ।। 4–

---

1:– वही (दादू) , साखी–25

2:– वही– साखी–26

3:–प्रभाती कबीर , पृ. 1350 , आदि ग्रंथ

4:– गउड़ी कबीर जी, पृ. 434 आदि ग्रंथ

हीरा देखि हीरे करउ आदेसु ।।
कहै कबीर निरंजन अलेखु ।। 1–

दादू– परम तेज परापरं, परम जोति परमेसुरं ।
स्वयं ब्रह्म सदई सदा, दादू अबिचल इस्थिरं ।। 2–

आदि अंत आगैं रहै, एक अनूपम देव ।
निराकार निज निर्मला, कोइ न जाणै भेव ।। 3–

साई मेरा सत्ति है ,निरंजन निराकार ।
दादू बिनसैं देखतॉं, झूठा सब आकार ।। 4–

वार पार नहिं नूर का ,दादू तेज अनंत ।
कीमति नहिं करतार की , ऐसा है भगवंत ।। 5–

अखा जी का भी कथन हैं –
मर्म मोटो पार ब्रह्मनो , ते तो रसनाए ना 'वे' 6–

---

1:– रामकली, कबीर जी, पृ. 973 आदि ग्रंथ

2:– दादू की बानी, भाग–1, पीव पीछण को अंग , साखी–29 , बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित सन् 1984 ई.

3:– वही , साखी–30

4:– वही , साखी–33

5:–वही, साखी–25

6:– अखानी काव्यकृतियों, खण्ड–2, पद–137, स्वाती प्रेस द्वारा प्रकाशित , अहमदाबाद, सन् 1988

निरंजन हो, ते अंजने नव रंजे ,
अंजने रंजे जंत भाई रे !
निरंजन नाम हो ते तेजे पड्युं,
गुणे ते न रंजे काय , भाई रे । 1–

मालिके – कुल काल और अकाल, दोनों से परे, ऊँचा और न्यारा है सारी रचना का खेल उसी के अपने हुक्म के अंदर है , फिर भी वह अर्कता है । वह निर्गुण –सगुण दोनों से परे है ,सर्व व्यापक,सर्वाधार, सृजनहार, निश्चल, ,समर्थ अविनाशी, पतित – पावन , अगम, अगोचर, अनादि, अनन्त और निर्मल चेतन हैं। वह अटल अछेद्य, अभेद्य ,ज्ञान तथा अमृत का भंडार ,निराकार, भक्त वत्सल सब ही से न्यारा , मार्धुय का सागर और सर्वव्यापी है । वह शब्द स्वरुप है और उसका नाम सर्वाधार है , तथा नाम के अंदर भी नामी के गुण है । उसका का जो निज स्थान है उसे संतों की वाणी में निज–घट निश्चल धाम और परम–पद भी कहा है । वह काल और अकाल , सगुण और निर्गुण दोनों में व्याप्त है जो कुछ दिखाई देता है वह उस स्वामी का ही प्रकाश है ।

कबीर– गोब्यदें तू निरंजन तूं निरंजन तूं निरंजन राया।
तेरे रुप–रेख नाहीं मुद्रा नाही माथा ।। टेक।।
समद नाहीं सिषर नाहीं, धरती नाहीं गगनां।
रवि ससि दोउ एकै नाहीं ,बहत नांही पवनां।।
नांद नाहीं व्यंद नांही, काल नाही काया।
जब तै जल व्यंब न होते , तब तूँही राम राया।।
जप नांही तप नांहीं जोग ध्यांन नहीं पूजा।
सिव नाहीं सकती नाहीं ,देव नहीं दूजा।।
राग न जुग न स्यांम अबरबन, वेद नहीं व्याकरनां।।
तेरी गति तूं हीं जॉनौं, कबीरा तो सरना।। 2–

---

1:– वही, परिशिष्ट , पद–49

2:– क. ग्रं. , राग आसावारी. पद 219, सं. बाबू श्यामसुंदर दास

दादू– जाती नूर अलाह का ,सिफाती अरवाह।
सिफाती सिजदा करै ,जाती बेपरवाह।।
वार पार नहिं नूर का ,दादू तेज अनन्त।
कीमति नहिं करतार की, ऐसा है भगवंत।।
निरसंध नूर अपार है ,तेज पुंज सब माहिं।।
निराकार नित निर्मला, कोई न जाणै भेव।।
अबिनासी अपरंपरा, बार–बार नहिं छेव।। 1–

अखा–चेतीने जो चिदानन्द विलसी रह्यो,चर्मनी दृष्टे ते चर्म दीसे,
सळंग सूत्रे विचारी जोजो तमो, वस्तुनी वेली ए छे पचीसे।
वेली विषे फल फूल ते वस्तुनां, फळतणी चटके बहु भात्य चाले,
वेश वहेवार, रंगरीत्य, चलण हलण, अखंड मंडळ चारे खाण महाले।
ज्यांहां ज्यम त्यांहां त्यम आप व्यापी रहयो,सम विषम सहु भात्य एनी,
नाम ने गुण रुप कर्म सहु एहनां, अखंड अभेद –बुध्य होये जेनी।
एक दृष्टांत छे मळतुं जोजो तमो, जो वाणी बुध्य गंभीर होये,
सुगंध जमीने बरस वेषे थयो, पण गंध ज छे जो रुप तोहे।
अखिल ब्रह्मांड मां अणु नथी टाळवा, दिव्यदर्शी सदा एम देखे,
ए अभेद–बुध्ये अखेपद पामीओ , ज्यारे हुं कर्ता टळयो रेख रेखे। 2–

---

1:– दादू दयाल की बानी, भाग 1 , पीव पिछावण को अंग , बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित , इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

2:– अखानी काव्य कृतिओ , खण्ड–2, पद, प्रेमलक्षणा भक्तिनी असरवाळा पद, 99, राग रागग्री, पृ. 66

सर्वव्यापक::–

वह परमात्मा कहाँ है ?सृष्टि की रचना करके वह इससे अलग कहीं नहीं बैठा है । वह तो पुरुष है ,अर्थात वह रचना में विश्राम करने घट–घट का वासी है ,व्यापक है । वह अकाल सर्वव्यापक है , तथा सबमें समा रहा है । कुरान में स्पष्ट निर्देश है :

यह सब सृष्टि उस परमात्मा की है । कुरान शरीफ में फ़रमाया गया है " अल्लाह की ही मिल्कियत है ,मशरिफ भी और मग्रिब भी , तुम चाहे जिस तरफ भी मुँह करो उस ओर ही अल्लाह का मुँह है , क्योंकि अल्लाह सर्वत्र परिपूर्ण है ।" 1–

इसलिये सभी धर्मो में कहा गया है कि परमात्मा को प्राप्त करने के लिये भटकने की आवश्यकता नहीं , आवश्यकता तो उसे देख सकने वाले नेत्र जागृत करने की है लकड़ी के अंदर अग्नि और दूध के अंदर घी के समान परमात्मा व्याप्त है ::

सगल बनसपति महि बैसंतरु ,सगल दूध महि घीआ ।।
ऊँच नीच महि जोति समाणी, घटि–घटि माधउ जीआ ।।2–

संत कबीर कहते हैं :

मुसलमान का एक खुदाइ ।। कबीर का सुआमी रहिया समाइ ।।3–

संकरु मउलियो जोग धियान ।।
कबीर को सुआमी सभ समान ।।4

---

1:– कुरान अलबकर 14–3

2:– सोरठि, महल्ला–5, पृ. 617, आदि ग्रंथ

3:–भैरव, कबीर, पृ. 1160, आदि ग्रंथ

4:– वसंत, कबीर, पृ. 1193 आदिग्रंथ

तूं सकल गहगरा, सफ सफा दिलदार दीदार।
तेरी कुदरति किनहूँ न जानी,पीर ,मुरीद ,काजी, मुसलमानी।
देवी देव सुर नर गण ग्रंध्रप, ब्रह्मा देव महेसर।। 1—

संत दादू दयाल के अनुसार भी परमात्मा सर्वत्र समाया हुआ है —
घीव दूध में रमि रहया, ब्यापक सबहीं ठौर।
दादू बकता बहुत है ,कथि काढ़ै ते और।। 2—

अखा— है हरि हाज हजुर, गुरु की दृष्टे न्याहाली ए हो।। 3—

सूरिजन सब ठाँहाँ पूरा रे।
देखो हाजर हझूरा रे।।4—

राम सर्वव्यापक है और यह समझने के लिये दादू कहते हैं कि पानी के भीतर प्रवेश करके यदि हम आँखे खोले तो हमें चतुर्दिक पानी ही पानी दिखाई देता है ,उसी प्रकार सृष्टि में ईश्वर का विचार करना चाहिये।

दादू पांणी मांहै पैस करि देषै,दिष्टि उघाड़ि।
जल बिंब सब भरि रह्या ,ऐसा ब्रह्म बिचारि ।। 5—

---

1:— कबीर ग्रंथावली, राग सूहौ, पद—1, सं. बाबू श्यामसुंदर दास

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, गुरुदेव को अंग, साखी—32, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

3:— अक्षयरस , धुआसा, राग काफी, पृ.— 11, सं कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित , सन् 1963 ई.

4:— वही , 17— सुरिजन सब ठहाँ पूरा रे!

5:— दादू दयाल , परचा को अंग, साखी—44, पृ. 47, सं. परशुराम चतुर्वेदी, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी

कबीर साहिब का भी कथन है ::–

जल मैं कुंभ कुंभ मैं जल है , बाहरि भीतरि पानी।
फूटा कुंभ जल ही समांनां, यहु तत कथौ गियानीं।। 1–

अखा जी दूसरे शब्दों में परमात्मा की सर्वव्यापकता को समझाते हैं :

पूरण ब्रह्म व्यापी रह्यो पोते, भाग्यो भरम स्वतंतर जोते। 2–

कोई स्थान खाली नहीं है ,आदि ,मध्य और अंत में वह प्रभु रम रहा है :

वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ।
अंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ।। 3–

प्रेम प्रेखत जीवा ठंडी थीवा तिसु जेवहु अवरु न कोई।
अदि अंति मधि प्रभु रविया जलि थलि महीअलि सोइ।। 4–

वह कृत और क्रिया दोनों का करने वाला है । सब रचना वह स्वयं है । उसके बिना और कुछ दिखाई नहीं देता है । वह करण–कारण है :

बिनु गोबिंद न दीसै कोई।। करन करावन करता सोई।। 5–

यह सब का एक ही प्रसार है । उसको छोड़ कर और कोई सृष्टि में नहीं आता। तान–पेटा सब वही है :

---

1:– क. ग्रं. , राग गौड़ी, पद–44, सं. बाबू श्याम सुंदर दास

2:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड 2, आत्मविचार–ब्रह्म विचारनां पद, राग प्रभाती, पद 124, स्वाती प्रेस द्वारा प्रकाशित, अहमदाबाद, 1986

3:–गउड़ी, महल्ला–5, पृ. 259, आदि ग्रंथ

4:– सूही, मुहल्ला–5, पृ. 784 , आदि ग्रंथ

5:– गउड़ी, महल्ला–5, पृ. 292, आदिग्रंथ

जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरनणहार।।
नानक एको पसरिआ दूजा कह दृसटार।। 1–

सभु गोबिंद है सभु गोबिंद है गोबिंद बिनु नहीं कोई।।
सुतु एक मणि है संत सहंस जैसे ओति पोति प्रभ सोई।। 2–

सूर्य की किरणों की तरह प्रभु विश्व में व्याप्त है :

जिउ पसरी सूरज किरणि जोति।।
तिउ घटि रमईआ ओति पोति।। 3–

यजुर्ववेद में कथन है :

स ओतः प्रोतश्च विभुःप्रजासु।। 4–

अर्थात वह सब जगह विद्यमान है ,संपूर्ण सृष्टि में ताने–बाने की भाँति समा रहा है ।

प्रत्यङ जनस्तिष्ठति सर्वतोमुखः।। 5–

अर्थात वह परमात्मा सर्वत्र विराजमान है वही सबके अंदर मौजूद है
अथर्ववेद में आया है ::

एकं ज्योतिर्बहुधा विभाति।। 6 –

---

1:– वही, पृ. वही

2:– आसा, नामदेव, पृ. 485, आदिग्रंथ

3:– वसंत, महल्ला–4, पृ. 117, आदिग्रंथ

4:– यजुवर्वेद, 32

5:– यजुर्वेद, 23–4

6:– अथर्ववेद, 13–3–17

यजुर्वेद में भी कथन है :–

ज्योतिरसि विश्वरुपम् 1–

अर्थात ,हे परमेश्वर ! तू सम्पूर्ण में व्याप्त ज्योति है ।

ईशावास्यमिदम् सर्वम् । 2–

अर्थात ,यह संपूर्ण संसार ईश्वर का निवास स्थान है ।

श्वेताश्वतर उपनिषद में आया है :

एवमात्मा ऽऽत्मनि गृह्मते ऽसौं सत्येनैनं तपसा यो ऽनुपश्यति।

तिलेषु तैलं दधिनीव सपिर्रावः स्त्रेतस्स्वरणीषु चाग्निः।। 3–

कुरान शरीफ में फरमाया है ,'' अल्लाह ही की मिल्कियत है ,मशरिक भी और मग्रिब भी ,तुम चाहे जिस तरफ मुँह करो, उस ओर ही अल्लाह का मुँह है क्योंकि अल्लाह परिपूर्ण है । 4–

मानस में तुलसी दास जी कहते हैं कि समस्त चराचर विश्व में ऐसी कोई जगह नहीं है ,जहॉं राम न हो। राम सभी देश, काल, दिशा और दिशा से रहित स्थान में रमें हुये है ।

हरि ब्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहि मैं जाना।। 5–

---

1:– यजुर्ववेद, 5–35

2:– यजुर्ववेद, 40–1

3:– श्वेताश्वतंउपनिषद, 1–15

4:– कुरान अलबकर, 14–3

5:– मानस 1.184.3–4

'मानस' में राम वाल्मिकी संवाद में तुलसी ने बड़े ही सुंदर ढ़ंग से राम की सर्व–व्यापकता दिखलाई है । जब राम वाल्मिकी से पूछते है कि मैं किस स्थान में पर्ण कुटि बनाकर रहूँ , तब बाल्मिकी सकुचाते हुये राम से पूछते है कि आप मुझे यह तो बताये कि आप कहाँ नहीं है ? तब मैं आप को रहने का स्थान बता दूँगा::–

पूँछहू मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाऊँ ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ ।। 1–

## –::सर्व व्यापक परमात्मा का हमारे अंदर ही निवास ::–

सन्तों के अनुसार यद्यपि राम परम निर्मल, अविनाशी और प्रकृति या माया से परे है , फिर भी वे हमसे दूर नहीं है । वे समस्त विश्व में रमे हुये हैं , सभी जीवों के हृदय में निवास करते हैं ।

श्वेताश्वतरोपनिषद में स्पष्ट कहा है कि समस्त प्राणियों में स्थित एक देव है , वह सर्वव्यापक ,समस्त भूतों का अन्तरात्मा, कर्मो का अधिष्ठाता , समस्त प्राणियों में बसा हुआ, सबका साक्षी, सबको चेतनत्व प्रदान करने वाला, शुद्ध और निर्गुण है :

एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः
साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च।। 2'

---

1:– मानस, 2.127

2:– अध्याय–6 , श्लोक–11

सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त परमात्मा सूक्ष्म रुप में पिंड के अंदर भी स्थित है ::

यदा पिंडे तथा ब्रह्मांडे । 1–

पीपा भी यही कहते है :

जो ब्रह्मण्डे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ।। 2–

कबीर साहिब का कथन है कि सकल ब्रह्माण्ड का खेल पिंड में देखा जा सकता है :

खेल ब्रह्मण्ड का पिंड में देखिया,
जरत की भमेना दूरि भागी।
बाहरा भीतरा एक अकासवत,
सुषमना डोरि तहँ उलटि लागी।। 3–

बसे अपंडी पंड में ,ता गति लेषे न कोइ।
कहै कबीरा संत हौ, बड़ा अचंबा मोहि।। 4–

ज्यौं तिल में तेल है ,ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें , जाग सकै तो जाग।। 5–

दादू दयाल भी कहते हैं :

जीयें तेल तिलन्नि में, जिये गंध फुलन्नि।
जीयें माखण षीर में, इयें रबं रुहन्नि।। 6–

---

1:– ऋग्वेद, पुरुष सूक्त, मंडल–10, सूक्त–90

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 695

3:– क. सा. की शब्दावली, भाग–1, चितावनी और उपदेश, शब्द–23, साखी–1, ब. प्रे. द्वारा प्रकाशित , इलाहाबाद, सन् 1986 ई.

4:– क. ग्रं. , हैरान को अंग, साखी 2, सं. बाबू श्यामसुंदर दास

5:– दा. द. की बा. भाग 1, वि. को अंग, साखी 5, बे. प्रे द्वारा प्र. इला. 1984 ई.

सब घट में गोविन्द है ,संगि रहै हरि पास।
कस्तूरी मृग में बसै,सूँघत्त डोलै घास।। 1—

कबीर साहब का भी कथन है ::—

कस्तूर कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़ें बन माहि ।
ऐसै घटि—घटि रांम है दुनिया देखै नांहि।। 2—

सो सांई तन में बसैं, भ्रंम्यो न जाँणैं तास।
कस्तूरी के मृग ज्यूं, फिर फिरि सूंघै घास।। 3—

कबीर खोजी राम का ,गया जु सिंघल दीप।
राम तौ घट भीतरि रमि रह्यिा ,जो आवै परतीत। 4—

कबीर एक स्थान पर कहते हैं कि जिस प्रकार नेत्रों के मध्य पुतलि का बास है उसी प्रकार खालिक (परमात्मा) शरीर में है :

ज्यूं नैनू मैं पूतली, त्यूं खालिक घट मांहिं।
मूरखि लोग न जांणही, बाहरि ढूँढ़ण जांहिं।। 5—

दादू जी भी फिर कहते हैं, परम तत्व सर्वत्र समाया हुआ है , रोम—रोम में रमा हुआ है , उसे दूर नहीं समझना चाहियेः

दादू देखूँ दयाल कूँ, सकल रह्या भरपूरि।
रोम'रोम मैं रमि रह्या , तूँ जिनि जानै दूरि।। 6—

---

1:— वही, कस्तूरिया मृग, साखी—3

2:— क. ग्रं. , कस्तूरिया मृग को अंग, साखी—1, सं. बाबू श्यामसुंदर दास

3:— वही, साखी—3

4:— वही, साखी—4

5:— वही, साखी—9, सं. बाबू श्यामसुंदर दास

6:— दादू दयाल ग्रंथावली, परशुराम चतुर्वेदी, पृ.—50

अखा जी का कथन है :—

पिंडय ब्रह्माण्ड, ब्रह्मंडे पिंड, वस्तु विचार्ये जाये अखंड
शुं शाथी कहो अळगुं पड़े, जो समरस पिंड ब्रह्मांड ज वडे? 1

पिंड शेध्ये प्राणेश्वर जड़े,
बीजु ते द्वैतने रुपक चढ़े। 2

आ पिंड जोतां ब्रह्मांड जोवाणु,
स्थावर —जंगम देह रे,
स्वर्ग—मृत्यु—पाताल—दशो दिश,
जो आपे स्वामी एह रे।
(कैवल्य गीता, रागआशावारी, साखी—14)

गुरु अमर दास जी भी परमात्मा को हमारे शरीर में निवास करने वाला और हमारा प्रतिपालन करने वाला कहते है :

काइआ अंदरि जग दाता,बसै सभना करे प्रतिपाला।। 3—

वे फिर कहते है :—

इसु गुफा महि अखुट भंडारा। जिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ।। 4—

दरिया साहब भी इसी विचार को प्रकट करते हुये कहते हैं :—

---

1:— अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड—1, छप्पा, 27—चीकणिया अंग, छप्पा—234, स्वाती प्रेस द्वारा प्रकाशित, अहमदाबाद, सन् 1988 ई.

2:— वही, 48, शोधन को अंग, छप्पा—581

3:— आदि ग्रंथ, पृ.754

4:— वही, पृ. 124

काया अंदर ब्रह्म निजु बासा। ताहि चिन्हहु प्रेम परगासा।
देखहु ग्यान एह काया बिलोई। अपनें आपु में जाय समोई।। 1

स्वामी जी महाराज भी हमें अपने शरीर के अंदर ही प्रियतम परमात्मा की खोज करने के लिये कहते हैं ::

खोज री पिया निज घर में ।। 2—

अखा फिर कहते हैं ।

खाण्य खुली है घट में निकसत रत्न अमुल्य।
परखन वाला कोई अखा ज्याकी बुध्य अलोल्य।। 3—

तुम मत जानो हरि दूर है ।
जो समज पड़े तो हुजूर है।
हरि व्यापी रहया सब घटके माहिं।
जहाँ देखुं तहाँ दूजा नाहिं।। 4

जैसा कि कहा गया है कि परमात्मा सभी जीवों के अन्दर निवास करते हैं । फिर भी हमें नजर नहीं आते । इस विरोधाभास का कारण यह है कि सर्व हृदय निवासी परमात्मा तब तक हमारे हृदय में गुप्त बने रहते है ,जब तक हम अपने हृदय रुपी आसन को उनके बिठाने लायक पवित्र नहीं कर लेते। जिस

---

1:— दरिया सागर चौपाई, 888 और 893

2:— सार वचन, पृ.—126

3:— अक्षयरस, साखियाँ, 48—राम परिक्षा को अंग, साखी—1, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई,

4:— वही, भजन, 18— तुम मत जानो हरि दूर है ।

प्रकार काठ में रहने वाली आग काठ में ही गुप्त बनीं रहती है , जब तक उस काठ को काठ से रगड़ कर आग को प्रकट नहीं कर लेते । काठ में गुप्त रहने वाली आग कभी हमारे काम नहीं आ सकती है । इसी प्रकार अन्तर में गुप्त रहने वाले परमात्मा भी हमारे काम नही आ सकते। उन्हें हमे अपने अंतर में प्रकट करना जरुरी है । कबीर के अनुसार वही आत्मा सौभाग्य शाली है जिसने हृदय में स्थित गुप्त परमात्मा से मिलाप कर लिया हो :

सब घट मेरा साइयाँ सूनी सेज न कोय।
भाग तिन्हौ का है सखी, जिहि घटि परगट होय।। 1–

इसी भाव को गुरु अमर दास जी इस प्रकार प्रगट करते है :

सभना का पिरु एकु है , पिर बिनु खाली नाहि ।
नानक से सुहागणी ,जि सतिगुर माहि समाहि।। 2–

दादू–घीव दूध में रमि रहया, व्यापक सबही ठौर।
दादू बकता बहुत है , कथि काढ़ै ते और ।।3–

जिहिं घट परगट राम है , सो घट तज्या न जाय।
नैनौं माहैं राखिये , दादू आप नसाइ।। 4–

---

1:– क. ग्रं. , 29–साध साषीभूत कौ अंग, साखी–18, सं. बाबू श्यामसुंदर दास

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 1088

3:– दादू दयाल की बानी, भा–1, गुरुदेव को अंग, साखी–32, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

4:– वही, 15–साध को अंग, साखी–84

हमारे अंदर रहने वाला परमात्मा इसलिये गुप्त है क्योंकि हमारा मन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आदि विकारों से अपवित्र बना हुआ है . केवल बाहरी धार्मिकता दिखाने से हम अपने अंदर राग या परमात्मा को प्रकट नहीं कर सकते । छल ,कपट और पाखंड से राम कभी नहीं मिलते । मन के निर्मल करने पर ही वे मिलते है परमात्मा प्रेम, भोले स्वभाव और विश्वास को चाहते है। :

भोले भाइ मिले रघुराइआ।। 1—

गुरु वाणी में अन्य स्थान पर स्पष्ट कहा गया है :

जिन कै मनि साचा बिस्वासु।।
पेखि—पेखि सुआमी की सोभा आनंदु सदा उलासु।। 2—

कबीर फिर कहते हैं कि चतुरता एवं बुद्धिबल नष्ट होने से सर्व व्यापक प्रभु मिल सकते हैं ::

रांम नांम तिहुँ लोक मैं, सकल रहया भरपूरि।
यहु चातुराई जाहु जलि, खोजत डोलैं दूरि।। 3—

स्वामी सेवक एक मत ,मन ही मैं मिलि जाइ।
चतुराई रीझै नहीं, रीझै मन के भाइ।। 4—

---

1:— आदिग्रंथ, गउड़ी , कबीरजी, पृ.—324

2:— धनासरी, महल्ला—5, पृ. 677

3:—क. ग्रं. , सं. श्यामसुंदर दास, कस्तूरिया कौ अंग, साखी—8

4:— वही, हेत—प्रीति स्नेह को अंग, साखी—4



HANSA MEHTA LIBRARY

मन प्रतीति न प्रेम रस, ना इस तन मै ढ़ंग।
क्या जाणौं उस पीव सूं, कैसे रहसी रंग।। 1—

कबीर नाव जरजरी, कूड़े खेवणहार।
हलके हलके तिरि गये, बूडे तिनि सिर भार।। 2—

भव सागर औगाह अगम है ,वहाँ नाव ना बेड़ा ।
छाड़ो कपट कुटिल चतुराई, केचुली पंथ न हेरा।। 3—

हंसा चलो अगम पुर हंसा।
छाड़ो कपट कुटिल चतुराई, मानि लहु उपदेसा।। 4—

संत दादू दयाल भी परमात्मा की प्राप्ति के लिये सत् संतोष ,भाव, भगति एवं विश्वास माँगते हैं ।

साई सत् संतोष दे ,भाव भगति बेसास।
सिदक सबूरी साच दे ,माँगै दादूदास।। 5—

सो मोमिन मोम दिल होइ। साई को पहिचाने सोइ।
जोर न करै हराम न खाइ। सो मोमिन भिस्त में जाइ।। 6

---

1:— वही, निहकर्मी पतिव्रता कौ अंग, साखी—16

2:— वही, चितावणी कौ अंग, साखी—62

3:— क. सा. की श,, भा 3, शब्द 6, पद 2, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित, इला, सन् 1984,

4:— वही , शब्द—7, पद—1

5:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, बिनती को अंग, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

6:— वही, साच को अंग, साखी—30

मानस में राम स्वयं कहते हैं:

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट ,छल छिद्र न भावा।। 1

अखा के भी यही विचार है ::–

चतुर दबे चतुराइ मा और मूढ़ पणे दबें मूढ़।
दोनु पाखे उड़े अखा ,तब प्रकटे पावक गूढ़।। 2–

तन उजले धन उजला और उजले कपड़े अंग।
एक मन मैले सब मस भया , जो उज्वल न मिला हरि संग।। 3–

चतुर गुणी त्यांहां गमन करी नव शके ,
गगन –रस–रुप थई ज जावुं, 4–

अब मन निर्मल कैसे हो ? इसके विकार कैसे दूर हो ? मन, काम, क्रोध, आदि अनेकों विकारों से भरा पड़ा है , फिर भला मन कैसे एकाग्र हो ? इस शरीर को पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ बिना समझे बूझे चारों ओर विषय– तुष्टि में भटकती फिरती है। ऐसी अवस्था में आत्मा प्रियतम ब्रह्म के पास कैसे जाय ?

---

1:– मानस, 5. 43. 3

2:– अक्षयरस, साखियाँ, 2–आत्मज्ञान को अंग, साखी–5, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, प्रकाशन म. स. वि. बड़ौदा, सन् 1963 ई.

3:– वही, साखी–6

4:– अखाना काव्यकृतिओ, खण्ड–2, 58, आत्मविचार ब्रह्मविचार ना पद, 41, राग, रामग्री, पद–98, सं. डॉ. शिवलाल, स्वाति प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित

सांई मेरे साजि दई एक डोरी, हस्त लोक अरु मैं तैं बोली।। टेक।।
इक झंझर सम सूत खटोला, त्रिस्नां बाव चहूं दिसि डोला।
पांच कहार का मरम न जांनां, एकै कहया एक नहीं मांनां।।
मूमर धांम उहार न छावा, नैहर जाता बहुत दुख पावा।
कहै कबीर बर बहु दुख सहिये, रांम –प्रीति–कर संगही रहिये।। 1

कबीर साहिब फिर लिखते हैं::

संसय काल सरीरे ब्यापै, काम ,क्रोध मद घेरा।
भूलि भटकि रचि पचि मरि जैहै, चलत हंस जम घेरा।।2

छाड़ो काम कोध औ माया, छाड़ो देस कलेसा।
ममता मेटि चलो सुख सागर, काल गहै नहीं केसा। 3–

संत दादू जी भी लिखते हैं :

आदि अंत लौं आइ करि, सुकिरत कछु न कीन्ह।
माया मोह मद मंछरा, स्वाद सबै चित्त दीन्ह।। 4

काम क्रोध संसै सदा, कबहूँ नॉव न लीन।
पाखंड परपंच पाय में , दादू ऐसैं खीन।। 5

---

1:– क. ग्रं. , राग गौंडी, पद–70, सं. डॉ श्यामसुन्दर दास

2:– क. सा. की श. भाग 3, शब्द 6, पद 1, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित इला. सन् 1989

3:– वही, शब्द–7, पद–2,

4:– दादू दयाल की बानी, भाग–1 , बिनती को अंग, साखी–10, बे. प्रे द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

5:– वही, साखी–11

सांई सेवा चोर मैं,अपराधी बंदा।
दादू दूजा को नहीं ,मुझ सरिखा गंदा।। 1–

तिल–तिल का अपराधी तेरा, रती–रती का चोर।
पल–पल का मै गुनही तेरा, बकसौ औगुण मोर।।2–

गोस्वामी तुलसीदास जी भी लिखते हैं कि संसार के सभी जीव काम ,क्रोध, लोभ और अहंकार आदि रोगों के कारण रोगी बने हुये हैं और इनकी वजह से दुःख, सुख, भय प्रीति और वियोग के झकोले सह रहे हैं :

एक ब्याधि बस नर मरहिं,ए असाधि बहु ब्याधि।
पीड़हि संतत जीव कहुं सो किमि लहै समाधि।।
एहि बिधि सकल जीव जग रोगी।
सोक हरष भय प्रीति बियोगी। 3–

अखा जी जीव के विकारों की ओर हमारा ध्यान दिलाते हुये कहते हैं :

लंपट, लोभी लालची नीलेज और लवाड़।
अखा असत्य नहीं आत्यमा जैसे छाया ताड़।। 4

जैसी कुलटा काम्यनी फुटा मन फजीत।
सो हरे फरे हरीजन में पण एसी मन की रीत्य।। 5

---

1:– वही, साखी–4

2:– वही, साखी–5

3:– मानस 7. 121

4:– अक्षयरस, साखियॉं, 36–लंपट अंग, साखी–1, सुं कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, प्र. म. स. वि. बड़ौदा, सन् 1963 ई.

5:– वही साखी–2

मन के विकारों को दूर करने, अर्थात काम, क्रोध ,मोह अहंकार आदि से छुटकारा पाने का उपाय बताते हुये कबीर जी, दादू जी, एवं अखा जी समझाते हैं कि परमात्मा की कृपा से जब सद्‌गुरु मिलते हैं और सद्‌गुरु के वचन में विश्वास कर शिष्य पूरी श्रद्धा के साथ संयम पूर्वक परमात्मा की भक्ति में लगता है ,तभी ये रोग दूर होते हैं , नहीं तो अन्य करोड़ों उपाय से भी यह दूर नहीं होते । इस प्रकार सद्‌गुरु की बताई हुई प्रभु–भक्ति की युक्ति ही विकारों को दूर करने वाली संजवनी जड़ी है ,

कबीर साहिब लिखते है ::–

संतो चूनर मोरं नई।
पॉच तत्त क बनल चुनरिया, सदगुरु मोहिं दई।। ।।
रात दिवस के ओढ़त पहिरत, मैली अधिक भई ।।
अपने मन संकोच करत है ,किन रंग बोर दई ।। ।।
बड़े भाग है चूनर के रे ,सतगुरु मिले सही।
जुगन–जुगन की छूटि मैलाई, चटक से चटक भई।। ।।
साहिब कबीर यह रंग रचो है , संतन कियो सही।
जो यह रंग की जुगत बनावै, प्रेम में लटक रही।। 1–

कबीर जी फिर कहते हैं कि जीव के गुरु की शरण में आने के पहले जो भी बुरे कर्मो की गठरी थी वह गुरु की ओट लेने पर नष्ट हो जाती है "

पहले बुरा कमाइ के , बाँधी विष की पोट।
कोटि करम पल में कटें, जब आया गुरु की ओट।। 2–

---

1:– क. सा. की श. , भाग–3, शब्द 9, पृ. 42–43, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद, सन् 1989 ई.

2:– कबीर साखी संग्रह, पृ.–10

दादू दयाल जी कहते हैं कि सद्‌गुरु के उपदेश से ही काम, क्रोध आदि विकार दूर हो सकते हैं । –

मन का मस्तक मूँडिये, काम क्रोध के केस।
दादू विषै विकार सब, सतगुरु के उपदेस।। 1–

सब जीवन कूँ मन ठगै, मन कूँ विरला कोइ।
दादू गुरु के ज्ञान सूँ, साई सनमुख होइ।। 2–

दादू मारया बिन मानै नहीं , यहु मन हरि की आणि।
ज्ञान षड़ग गुरुदेव का , ता संग सदा सुजाण।। 3

अखा जी भी दूसरे शब्दों में यही कहते हैं ::–

हरि कीपा तब जानीये जब हरीजन सुं होये प्यार।
राग सुतका कोकड़ा हरिजन ताका तार।। 4–

हितकारी सतगुरु बीना नहीं और नही संसार।
राखे भवमां भटकतां पल में पावे पार।। 5–

---

1:– दादू दयाल की बानी, भा–1, गुरुदेव को अंग, भरमी मन का दमन, , साखी 77, बे. प्रे इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित

2:– वही, साखी–91

3:– दादू दयाल ,गुरुदेव जी कौ अंग, साखी–85, सं. परशुराम चतुर्वेदी, नागरी प्रचारिणी सभा , वाराणसी द्वारा प्रकाशित, सं. 2023 वि.

4:– अक्षयरस साखियाँ, 32–कीपा अंग, साखी–1, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, प्र. म. स. वि. बड़ौदा, सन् 1983 ई.

5:– वही, गुरुदेव को अंग , साखी–1

पाप ताप संसार को जले जीवकू ठौर।
बिन सदगुरु सीतल करे अखा ठोर नहीं और।। 1–

परमात्मा की प्राप्ति सदगुरु कृपा से ही हो सकती है । सदगुरु की प्राप्ति से भ्रमों ,विकारों ,माया, और अहं–भाव का नाश होता है , मन वश में आता है और जीव भव सागर से तर जाता है ।

ब::– जीव–

जीव वास्तव में परमात्मा का ही अंश है । परमात्मा सागर है , आत्मा उसकी बूँद है । जो समुद्र की असलियत है , वहीं बूँद की भी है । जो परमात्मा की वास्तविकता है वही आत्मा की है । आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व का सार एक है और दोनों का आपस में अंश –अंशी संबंध है जिसका आधार प्रेम है । आत्मा परमात्मा की तरह चेतन, ज्ञान–रुप और आनन्द–रुप है ।

यह सत्य हमें कबीर जी, दादू जी, एवं अखा जी की वाणी से मिलता है :

कहु कबीर इहु राम की अंसु। 2–

हंम चु बूंदनि खालिक, गरक हम तुम पेस।
कबीर पनह खुदाइ को , रह दिगर दावानेस।। 3–

संत दादू दयाल भी कहते हैं कि जीव और ब्रह्म दो नहीं है :

" जीव ब्रह्म द्वै नाहिं।। " 4

---

1:– वही, साखी–9

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 871

3:– क. ग्रं.) राग आसावारी, पद–258, सं बाबू श्यामसुदर दास

4:– दा. वा. च. त्रि. , पद 206, पृ. 492

यहूदी मत के अनुसार परमात्मा ने मनुष्य को अपनी शक्ल पर बनाया है। 1– हज़रत ईसा ने भी परमात्मा और आत्मा के रिश्ते को पिता और पुत्र का रिश्ता कहा है । बाईबल में आता है :आत्मा परमात्मा की ज्योति है 2– क्योंकि परमात्मा ने इसमें अपना प्रकाश रखा है । 3–

इस्लाम में दो प्रकार की रचना मानी गई है :
एक आलम –ए–खलक, जिसको पैदा किया गया है और जो नाशवान है , दूसरी आलम–ए – अमर। वह परमात्मा के हुक्म ,रजा, कलमे या शब्द की अनादि दुनिया है ,और वह कभी नाश नही होती । आत्मा को परमात्मा की तरह आलम–ए –अमर की वस्तु माना गया है :

'अलरुह मिन अमर–ए–रब्बी' । 4–

वेदांत दर्शन 5 में जीव को ब्रह्म का अंश माना गया है ।

जीव का संबंध ब्रह्म से आदि, अंत और मध्य में एक रस और अविच्छिन्न भाव से होता है वे केवल एक ही रह जाते हैं :

आदि अंति मधि एक रस, टूटे नहिं धागा।
दादू एकै रहि गया, तब जाणी जागा।। 6

---

1:– God Created man in his own image
( Genesis 1: 27)

2:–The spirit of is the candle of the Lord
(Proverbs 20: 27)

3:– He hath given us of his sprit
( 1- John 4:13)

4:–कुरान मजीद– 17:85 (आत्मा परमात्मा का अंश)

5:– II : 3 : 43

6:– वही, लै को अंग, साखी–7, पृ. 126

जब पूरण ब्रह्म विचारिये, तब सकल आतमा एक। 1–

आतम माहिं राम है , पूजा ताकी होइ।
सेवा बंदन आरती, साध करैं सब कोइ।। 2–

गुरु नानक साहिब का भी उपदेश हैं :

आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा।। 3–

दरिया साहिब भी कहते हैं :–

पुर्ख एक सभन्हि ते न्यारा। जाको तेज बरत संसारा।।
ताके अंश जीव सब अहई। बोलनिहार बोले घटकहई ।। 4–

स्वामी जी महाराज का भी वचन है :

पुरुष अंस तू सतपुर बासी। फॅांसी काल लगाई ।। 5–

गोस्वामी तुलसीदास भी मानस में कहते हैं :

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी।।
ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी।।
सो मायाबस भयउँ गोसाई। बॅंध्यो कीट मरकट की नाई।। 6–

---

1:– वही, दया निर्विरता कौ अंग, साखी–29, पृ. 326

2:– दा. द. की बा., भा. 1, परचा 262, बे. प्रे. इला. द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 74

3:– आदि ग्रंथ, पृ.–1153

4:– भरिमहेतु, चौपाई, 132–133

5:– सारवचन, पृ.–110

6:– मानस, 7. 116 (ख) 1–2

अखा जी भी कहते हैं कि देह की भावना मिटने से जीव चैतन्य हो जाता है :

मिटी देह की भावना, अब स्वयं चैतन्य है चला।। 1–

षट दर्शन में स्पष्ट कहा है कि चेतन द्रव्य को ही जीव कहा जाता है :

" चेतना लक्षणो जीवः" 2–

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि जीव माया के आवरण में बँधा हुआ है । अतः जीव ब्रह्म का स्वरुप होते हुये भी पृथक प्रतीत आता है । अज्ञान के आवरण के कारण ही जीव आनन्द–स्वरुप होते हुये भी दुःखी है , असीम होने के बावजूद ससीम है , सर्वज्ञ होते हुये भी अल्पज्ञ है, नित्य और अविनाशी होता हुआ अनित्य और विनाशशील है , निर्विकार होता हुआ भी सविकार है । इसलिये स्वभाव से ही यह चेतन ,निर्मल , अविनाशी और सहज–सुख का भण्डार है । ऐसा जीव बंधन में कैसे पड़ गया ? यह एक अकथनीय कहानी है । इसे अपनी अक्ल से समझना बहुत ही कठिन है । केवल अपने आन्तरिक अनुभव द्वारा इसे समझ सकते है । इसे कहकर समझाया नहीं जा सकता । पर इतना स्पष्ट है कि जीव माया के वश में होकर संसार के बंधन में उसी तरह फँस गया है जिस तरह बिल्ली तोते को चट करने के लिये बैठी है :

सुवटा डरपत कहुँ मेरे भाई, तोहि डराई देत विलाई।
तीनि बार रुंधै इक दिनि मैं ,कबहूँ क खता खवाई।। टेक।।

---

1:– ब्रह्मलीला, चौपाई–4

2:– षटदर्शन– समप्यय 47 पर गुणरत्न की टीका

या मंजारी मुगध न मानै, सब दुनियाँ डहकाई।
राणां राव रंक कौं ब्यापैं , करि करि प्रीति सवाई।।
कहत कबीर सुनहु रे सुवटा, उबरे हरि सरनाई।
लाषों मांहि तै लेत अचानक, काहू न देत दिखाई ।। 1—

दादू दयाल का भी कथन है कि जिस प्रकार मरकट जीभ रस के कारण खुद ही कैद हो जाता है उसी प्रकार जीव माया के वश में होकर कैद हो गया है:

जैसे मरकट जीभ रस, आप बँधाणा अंघ।
ऐसैं दादू हम भये, क्यों करि छूटे फंध।। 2—

ज्यौं सूवा सुख कारणो, बंध्या मूरख माहिं।
ऐसे दादू हम भये, क्यौंही निकसैं नाहिं।। 3—

अखा जी अन्य स्थान पर कहते हैं कि जिस प्रकार कुत्ता हड्डी चूसता है और उसके मुँह से निकलते हुए खून को देख कर सोचता है कि यह खून हड्डी से निकल रहा है ऐसा समझकर वह खुश होता है । उसकी खुशी का कारण उसके मन का अज्ञान है । उसी प्रकार मनुष्य भी सांसारिक पदार्थों में लिपटा रहता है और अज्ञान वश उसमें से ही सुख ढूँढ़ने का प्रयास करता है :

---

1:— क. ग्रं. , राग गौडी, पद 97, सं. बाबू श्यामसुंदर दास

2:— दादू दयाल की बानी, भा—1, माया कौ अंग, साखी—35—36, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

3:— अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड—1, 46—माया—अंग, साखी—559, सं. डॉ. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद, द्वारा प्रकाशित

चूसे श्वान अस्त महादुखे, नीसरे रुधिर पोताने मुखे।
रातो रंग देखी मलकाय, पण कारण पडियुं पोतामांय।
सघळे रचाणुं ताहरुं मन ,अखा गमे तेम करे जतंन। 1–

गोस्वामी तुलसीदास जी भी कहते हैं कि माया के वश में होने के कारण जीव मतिमंद और अभागा बन गया है और इसके ऊपर अनेकों पर्दे चढ़ गये हैं । माया के वश होकर ही यह अपने स्वरुप को भुला बैठा है और इसी भ्रम के कारण इसे कठिन दुःख भोगना पड़ता है :

मायाबस मतिमंद अभागी।
हृदयँ जमनिका बहुबिधि लागी।। 2–

माया बस स्वरुप बिसरायो।
तेहि भ्रमतें दारुन दुख पाया। 3–

**बंधन में पड़े जीव की दुर्दशा ::–**

परमात्मा से अलग होकर जीव का रुप धारण करने के बाद में यह आत्मा माया के फेर में पड़कर अनेक कुकर्म करता है ,पाप करता है , अपने आपको परमात्मा से पृथक समझने लगता है । जीव सांसारिक विषय भोगों के रस में अचेत हो गया है । उसे अपने इस पापकर्मो का भोग उस समय भोगना पड़ेगा जब यम लोक में जाकर उसे यातनाएँ सहनी पड़ेगी। कबीर यही बात दूसरे शब्दो में कहते हैं :

---

1:– वही, छप्पा–92, पृ.–48
2:– मानस , 7.72 (ख) 4
3:– विनय पत्रिका–136.1

कबीर मन गाफिल भया ,सुमरिण लागै नाहिं।
घणीं सहेगा सासना, जम की दरगह माहि।। 1—

अन्य स्थान पर कबीर जीव की स्थिति बताते हुये कहते हैं :

कबीर मन विकरै पड़या ,गया स्वाद कै साथि।
गलका खाया बरजता, अब क्यूं आवै हाथि।। 2—

दादू दयाल माया में पड़े जीव की दुर्दशा का निरुपण करते हुये कहते हैं :

माया देखे मन खुसी, हिरदै होइ बिगास।
दादू यहु गति जीव की , अंति न पूरौ आस।। 3—

हस्ती, हय, बर, धन, देखि करि, कूल्यौ अंग न माइ।
भेरि दमामा एक दिन ,सब ही छाड़े जाइ।।4—

(दादू) माया का बल देखि करि, आया अति अहंकार।
अंघ भया सूझै नहीं, का करिहै सिरजनहार।। 5—

---

1:— क. ग्रं. , मन कौ अंग, साखी—17 सं बाबू श्याम सुदर दास

2:— वही, साखी—16

3:— दादू दयाल की बानी, भा—1, माया को अंग, साखी—18, बे. प्रे. द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

4:— वही, साखी—15

5:— वही, साखी 16

अखा जी का भी कथन है :–

सर्व विकार ए मननो जाण्य, चोराशी लक्ष ने चारे खाण्य।
दृष्टपदारथ चित्तनो घडयो, चितवत् एह ने चितशु जडयो।
चित्तरुपी रोग मननो थयो, अखा आपोपुं भूली गयो। 1–
विषय–मादक पुरुषे भक्ष कर्यो, त्यारे बुध्यनेत्रे भ्रम ज स्फूर्योः
भ्रमपड़ ते हरिदृष्टि गई , त्यारे नेत्रे माया आवी रही।
मायाबळ अखा प्रचंड, तेहेनां छ दर्शन ने छन्नु पाखंड। 2

परमात्मा से अलग होकर जीव अपने स्वरुप को भूल गया है और जिस भी शरीर में जन्म लेता है उसे ही भ्रमवश अपना स्वरुप समझकर कठिन कष्ट भोगता रहता है । इसे सपने में भी कभी सच्चा सुख नहीं मिलता । मन–इन्द्रियों के बहकावे में जीव हठ पूर्वक ऐसे ही मार्ग पर चलता है जहाँ केवल दुःख ही दुःख है । सुख–निधान परमात्मा की ओर कभी ध्यान नहीं देता । पर परमात्मा को पहचाने बिना इस मूढ़ जीव को भला शांति कहाँ मिल सकती है ? इस बात को स्पष्ट करते हुये तुलसीदास जी कहते हैं ।–

आकर चारि लच्छ चौरासी।
जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी।।
फ़िरत सदा माया कर प्रेरा।
काल कर्म सभुव गुन घेरा।। 3–

---

1:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–1, छप्पा 441, पृ.– 221, सं. शिवलाल जेसलपुरा , स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1988

2:– वही,छप्पा–440

3:– मानस, 7.43.2–3

जिव जबतें हरितें बिलगान्यो, तबतें देह गेह निज जान्यो।।
माया बस स्वरुप बिसरायो। तेहि भ्रमतें दारुन दुख पायो।। 1

जीव अपने ही कर्मो के कारण आवागमन के चक्र में पड़कर बार–बार गर्भवास का कठिन कष्ट उठाता है ।

आचार्य शंकर जीवात्मा को सब प्रकार के देहात्म–भाव से मुक्त होकर अपने शुद्ध चैतन्य स्वरुप में स्थिर हो जाने को मुक्ति कहा है ।
मैं मेरी भावना के कारण भी जीव परमात्मा से नहीं मिल सकता।

मोर तोर की जेबड़ी, बलि बंध्या संसार।
कांसि कंडूवा बासुत कलित, दाझण बारंबार।। 2–

अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि अहं बड़ा रोग है और वह मनुष्य को नाश की ओर ले जाता है ,अतः शीध्रातिशीध्र इसका त्याग करना चाहिये :

मैं मैं बड़ी बलाइ है,सकै तौ निकसी भाजि ।
कब लग राखौं है सखी ,रुई पलेटी आगि ।। 3–

मैं मैं मेरी जिनि करैं , मेरी मूल बिनास ।
मेरी पग का पैषड़ा , मेरी गल की पास ।। 4–

संत कबीर भी कहते हैं कि मैं ,मेरी भावना के कारण ही जीव ईश्वर को भूल गया है ।

---

1:– मुण्डकोपनिषद (3/2/8) का राग. भाष्य
2:– क. ग्रं. , चाणक कौ अंग, साखी–22 सं. बाबू श्यामसुंदर दास
3:– वही, चितावणी कौ अंग, साखी–60
4:– वही, साखी–61

मैं मैं करते सबै जग जावै, अज हूँ अंध न चेते रे ।
यहु दुनिया सब देख दिवानी ,भूलि बये हैं केते रे।।
मैं मेरे में भूलि रहे रे, साजन सोई बिसारा ।
आया हीरा हाथि अमोलिक, जनम जुवा ज्यूँ हारा ।। 1–

अन्य स्थान पर दादू जीवों को चेताते हुए कहते हैं कि तुने स्वयं ही अपने कर्मों की रस्सी से अपने आप को जकड़ कर बाँध लिया है । अतः अपने आप को वश करने से जीव माया से बच सकता है ::

आपै मारै आप कौं, आप आप कौं खाइ।
आपै अपणा काल है ,दादू कहि समझाइ।। 2–

आपै मारै आप कौं , यहु जीव विचारा।
साहिब रावणहार है ,सो हितु हमारा।। 3

गोस्वामी तुलसीदास जी का भी यही कथन है :

मैं अरु मोर तोर तैं माया ,जेहि बस कीन्हें जीव निकाया।। 4

अखा जी का भी यही कथन है कि आपा भाव ही जीव के बंधन का कारण है ।

अनुभव जे मोटा तणो आपा पर नाहीं जे विखे।
आप गलियुं आप मॉहे द्वन्द्वातीत रहया सुखे।। 5–

---

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–2, राग गौडी, शब्द–30, पद–1, बे. प्रे, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

2:– वही, भाग–1 माया को अंग, साखी–60

3:– वही, साखी–59 4:– मानस, 3.14.1, जीवों के समूह

5:– अखेगाता, कडवुं–15

अन्य स्थान पर अखा दूसरे शब्दों में समझाते हैं :

मिटी देह की भावना अब स्वयं चैतन्य है चला ।। 1–

इस प्रकार जीव की वास्तविक स्थिति को देखकर संतों ने जीव का ध्यान सांसारिक दु:खों की और दिलाकर उसे जगाने की कोशिश की है । कबीर साहब कहते है :–

कबीर यहु जग कुछ नहीं षिन षार षिन मीठ ।
काल्हि जु बैठा माड़ियां, आज मषांणां दीठ।। 2–

काची काया मन अथिर , थिर थिर कॉम करंत ।
ज्यूँ ज्यूँ नर निधड़क फिरै, त्यूँ त्यूँ काल हसंत।। 3

दादू दयाल भी जीव की दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं :

(दादू कहैं) जिन विष पीवै बाव रे , दिन दिन बाढ़े रोग।
देखत ही मरि जायेगा, तजि विषया रस भोग।। 4–

अपणा पराया खाइ विष, देखत ही मरि जाय।
दादू को जीवै नहीं , इहिं भौरैं जिनि खाइ।। 5–

---

1:–: ब्रह्मलीला, चौपाई–8

2:– क. ग्रं. , 46–काल कौ अंग, साखी–15, सं. डॉ. श्यामसुंदर दास

3:– वही, साखी–30

4:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, माया कौ अंग, साखी–'133, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

5:– वही, साखी–134 (भूल से)

अखा जी भी दूसरे शब्दों में यही फरमाते हैं :

शब्द स्पर्श रुप रस गंध, एणे व्यसने जीव पाम्यो धंध।
त्यारे लोभ मोह पांचे थया छता, प्राये प्रकृति—ऊदरमां हता।।
तेणे मोहयों जीव रोगीलो थयों ,त्यारे अखा वस्तु विचारथी गयो। 1

गुरु नानक साहिब भी कहते हैं :

नानक दुखीया सभु संसारु । 2—

गुरु रविदास भी जीव रुपी राजा के संसार के भ्रम रुपी सपने में भिखारी बनकर दु:खी होने की बात कहकर उसे जगाते हैं :

माधौ , का कहिए भ्रम अैसा, तुम कहियत होहु न जैसा।।
निप्रति ऐक सेज सुख सूता, सूपिनें भया भिखारी।
आछित रात बहोत दुख पायौ ,सौ गति भई हमारी।। 3

स्वामी जी महाराज भी चौरासी लाख योनियों में भटकने और जन्म—जन्म दुख पाते रहने की याद दिलाकर हमें मनुष्य जीवन का लाभ उठाने के लये चिताते हैं :

चारो जुग चौरासी भोगी। अति दुख पाया नर्क रहा।।
जन्म, जन्म दुख पावत बीते। एक छिन कहीं ने चैन लहा।।

---

1:— अखानी काव्यकृतिओ , खण्ड—1, छप्पा—174, पृ. 141, सं. डॉ शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1988 ई.

2:—आदि ग्रंथ, पृ. 654

3:— गुरु रविदास वाणी, (वैणी प्रसाद शर्मा ), वाणी—61

. पाप पुन्य बस बिपता भोगी। नहिं सतगुरु का चरन गहा।।
अब यह देह मिली किरपा से । करो भक्ति जो कर्म दहा।। 1–

जीव के कष्टों की ओर ध्यान दिलाकर सन्त जीव को उनसे छुटकारा पाने का उपाय बताते हुये कहते हैं कि हमें उस परमात्मा के भजन में लगना चाहिये जो भक्तों को सुख देने वाला एवं भव सागर के लिये जहाज रुप है ।

कबीर का कथन है :

जपि जपि रे जियरा गोव्यंदो, हिल चित परमानन्दो रें ।
बिरही जन कौ बाल हौ , सब सुख आनंदकंदो रे।। 2

अन्य स्थान पर वे कहते हैं।

राम नांम निज अमृत सार,
सुमरि सुमरि जन उतरे पार।
कहै कबीर दासिन कौ दास ,
अब नहीं छाड़ौ हरि के चरन निवास।। 3

दादू दयाल जी कहते हैं :–

नऊ दुवारे नरक के , निस दिन बहै बलाइ।
सुची कहॉं लौं कीजिये, राम सुमरि गुण गाई।4

---

1:– सारवचन, पृ. 119

2:– क. ग्रं. , राग धनाश्री, पद–399, सं. बाबू श्यामससुंदर दास

3:– वही, राग कल्याण, पद–393

4:– दादू दयाल की बानी, भाग 1, मन कौ अंग, साखी–95, बे, प्रे द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद, सन् 1984 ई,

आवट कूटा होते है , औसर बीता जाइ।
दादू करि ले बंदगी, राखणहार खुदाई ।। 1

अखा जी भी दूसरे शब्दों में यही फरमाते हैं:

अखा चंदन सदगुरु ज्याके पासु बन बसाय।
न बांसु बास न भेद ही गठ्य पड़ी हृदे माय ।। 2

---

1:— वही, साच कौ अंग, चितावनी, साखी—38

2:— अक्षयरस, साखियाँ, उपदेश को अंग, साखी—24 सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, संस्करण, 1963 ई.

स::– जगत::–

जगत के उत्पत्ति एवं प्रलय संबंधित चर्चा प्राचीन काल से ही मानव के चिंतन का विषय रही है ।

इस जगत का निर्माण कैसे हुआ ? इसके निर्माण का उद्देश्य क्या है आदि गहन विषयों का चिंतन दुनिया के हर एक धर्म पुस्तकों में मिलता है । संत कबीर भी इस संबंध में जिज्ञासा प्रकट करते हुये प्रश्न पूछते हैं :

कहौ भइया अंबर कासूं लागा,
कोई जांणैंगा जांननहार सभागा ।। टेक।।
अंबरि दीसै केता तारा,
कौन चतुर ऐसा चितरनहारा।।1

सृष्टि के निर्माण का प्रयोजन क्या है यह प्रश्न दादू के मन में भी है :

क्यो करि जग रच्चौ गुसांई,
तेरे कौन बिनाद बन्यौ मन माही।। 2–

अखा जी के मन में भी यही प्रश्न है :

माणस बिना अनेरी जात अति विचित्र यहु दीसै भात।
अे शुं ? ने केम ते नीपजे पाछौ पुनुरपि देहने भजे।। 3

सृष्टि का निर्माण ईश्वर ने अपनी मौज में आकर किया है ।

---

1:– क. ग्रं. , राग गौड़ी, पद–141, सं. बाबू श्यामसुदर दास

2:– दादू दयाल की बानी, भा–2, शब्द–235, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, संस्करण 1984 ई.

3:– चित्तविचार संवाद, 1631

कबीर साहब का कथन है :

एक बिनांनी रच्या बिनांन, अयांन जो आपै जांन ।। 1–

बहु बिधि चित्र बनाय कै, हरि रच्यौ क्रीड़ा–रास।
जेहि न इच्छा भूलिबे की , ऐसी बुधि केहि पास।। 2–

कबीर– जिनि यह चित्र बनाइया, सो साचा सतधार।
कहें कबीर ते जन भले जे चित्र लेहि विचार। 3

संत दादू का भी यही मानना है –

खलिक खेलै खेल करि , बूझे बिरला कोइ।
ले करि सुखिया ना भयाँ, देकर सुखिया होइ।। 4–

अखा जी का भी विधान है :

ऐसे आप सगुन ब्रह्मस्वामी, ऐसे ही अंश भयो बहुनामी।
आप फेलाव किनो ग्रही माया, सहज भोग करी सुत तीवुं जाया।। 5–

---

1:–कबीर ग्रंथावली, बड़ी अष्टपदी रमैणी, पद–10, सं. श्यामसुंदर दास

2:– कबीर, कबीर वाणी, सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पद–171, राजकमल प्रकाशन , पाँचवाँ संस्करण–1987 ई.

3–कबीर ग्रंथावली, अष्टपदी रमैनी, सं. बाबू श्याम सुंदर दास, नागरी प्रचारिणी सभा

4:– दादू वाणी, मंगलदास, पद–235, पृ. 576

5:– अक्षयरस, ब्रह्मलीला, राग–सामरी, चेखरा–2, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई,

श्वेताश्वर उपनिषद में कहा गया है कि एक ब्रह्म ही संसार की उत्पत्ति का कारण है ।

इस जगत के रचयिता ईश्वर है किन्तु फिर भी यह जगत नाशवान और अनित्य है । जो आज है ,वह कल नहीं । इस मृत्यु के लोक में किसी वस्तु में स्थिरता नहीं । यह मृत्यु मंडल (मौत का इलाका) है और इसके नष्ट होने में देर नहीं लगती । संसार के सब सामान भी क्षणभंगुर है ।

कबीर जी भी कहते हैं कि यह संसार सेंमर की फूल की तरह बाहर से सौन्दर्यशाली है किन्तु अन्दर से कुछ नही होताः

यहु ऐसा संसार है , जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के ब्यौहार कौ, झूठे रंगि न भूलि।।1–

कबीर जी अन्य स्थान पर दूसरे शब्दो में यही स्पष्ट कहते हैं :

कबीर हरि की भगति बिन, ध्रिग जीमण संसार।
धूंवा केरा फौलहर, जात न लागे बार।। 2

संत दादू दयाल भी संसार की निरर्थकता को और संकेत देते हुये कहते हैं :

मन हस्ती माया हस्तिनी, सघन बन संसार।
ता में निर्भर है रह्या , दादू मुग्ध गँवार।3

---

1:– क. ग्रं. , चितावणी कौ अंग, साखी–13, सं. बाबू श्यामयुंदर दास

2:– वही, साखी–27

3:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, माया कौ अंग, साखी–52, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

ज्यौं जल मैंणी मछली, तैसा यहु संसार।
माया माते जीव सब,दादू मरत न बार।। 1–

अखा ने भी जगत का निरुपण उसी अर्थ में किया है :

संसार रुपी मोहनिशाने, निवर्तवाने काज।
दिनमणि छे अखेगीता ,पामे सदोदित राज।
एहेमां ज्ञान–भक्ति–वैराज्ञ छे , मांहे माया–निरीक्षण द्रष्टय।
जीवन्मुक्त ने महामुक्तनां मांहे चिन्ह ने वळी पुष्टय।। 2–

आदि ग्रंथ में भी कहा गया है कि यह रचना जल के बुलबुले के समान कई बार उत्पन्न और नष्ट होती रहती है :

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत।।
जग रचना तैसी रची कहु नानक सुन मीत।। 3–

अतः जो कुछ दृश्यमान है ,सब नष्ट होने वाला है । संसार के सब सामान भी क्षणभंगुर है राजा, प्रजा, मण्डप, महल, और साथ ही उनके अंदर रहने वाले ,संसार की सब सामग्री ,सोना, चांदी, तथा उसको पहनने वाले ,यह काया, कपड़े ,स्त्री और पुरुष सब नष्ट हो जाने वाले हैं । अतः इस अस्थिर संसार में कुछ मॉंगने योग्य नहीं है । कबीर साहिब का कथन है :

क्या मॉंगौं कछु थिर ना रहाई , देखत नैन चल्यो जग जाई।।
इक लख पूत सवालख नाती , जा रावन घर दिया न बाती।।

---

1:– वही, साखी–79

2:– अखेगीता, कडवा–40, 4–5

3:– सलोक, महल्ला–9, पृ.1429

लंका सा कोट समुद्र सी खाई, जा रावन की खबर न पाई।।
सोनै कै महल रुपै कै छाजा, छोड़ि चले नगरी के राजा।। 1—

संत दादू ने भी यह संसार को झूठा कहा है :

(दादू) झूठा संसार , झूठा परिवार , झूठा घर बार,
झूठा नर नारि तहाँ मन मानै।
झूठा कुल जाति ,झूठा पित मात,
झूठा बंध भ्रात ,झूठा तन गात, सति करि जानै।।
झूठा सब धंध, झूठा सब फंध,
झूठा सब अंघ, झुठा सब चंद, कहा मधु छानै।
दादू भागि, झूठ सब त्यागि,
जागि रे जागि देखि दिवानै।। 2—

अखा जी भी सृष्टि के संबंध में कहते हैं :

माया वखाणिए माट एने,दृष्ट पदारथ जेटलो,
श्रुत पदारथ जेजे कहावे, पाछो वणसशे तेटलो।
उपन्युं ते अलपाय निश्चे, ब्रह्म आंदे कीट जे। 3—

अतः इस आसार जगत में सार वस्तु हरि आप है या उसका अंश जीवात्मा हैः

---

1:— क. सा. की शब्दावली, भाग—1, चितावनी और उपदेश, शब्द—64, बे. प्रेस, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1989 ई.

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, माया कौ अंग, साखी—42, ब. प्रे. द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

3:— अखेगीता , कडवुं 4:3

कहु कबीर इहु राम की अंसु ।।
जस कागद पर मिटे न मंसु ।। 1—

संत दादू दयाल का भी कथन है :

जहाँ आतम तहँ राम है , सकल रह्या भरपूर ।
अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, दादू सेवग सूर ।। 2—

अखा जी भी कहते हैं :

अमल आत्मा एक पूरण , अखंडित अविनाश
नहिं जेने देश काळ ।। 3—

आदि ग्रंथ में भी स्पष्ट कहा गया है कि यह तन और सब संसार सब मिथ्या है । इसमें केवल राम या राम का अंश ,जो देह में विराजमान है ,वही सच्चा है :

साधो इह तनु मिथिआ जानउ ।।
या भीतरि जो राम बसतु है साचो त हि पछानो ।। 4—

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ।।
इन में कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ।। 5—

---

1:— आदि ग्रंथ , गौडी कबीर जी, पृ. 871

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, लय को अंग, साखी—23, बे. प्रेस द्वारा प्रकाशित, इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

3:— अखेगीता, कड़वुं—17 : 2,4

4::— बसंतु , महल्ला—9, पृ. 1186

5:— सलोक, महल्ला—9, पृ. 1429

द::– माया::–

माया परमात्मा की रची हुई शक्ति है । कबीर साहिब फरमाते हैं :

ई माया रघुनाथ की बौरी, खेलन चली अहेरा हो।
चतुर चिकनियॉं चुनि–चुनि मारे, कहु न राखे नेरा हो।। 1

अन्य स्थान पर वे कहते हैं :

अब हम जाना हो हरि बाजी को खेल।
डंक बजाय देखाय तमाशा ,बहुरि सो लेत सकेल।
हरि बाजी सुर –नर–मुनि जहैडे, माया चेटक लाया। 2

दादू दयाल का भी कथन है :–

बाजीगर की पूतली ज्यौं म्रकट मोहया।
दादू माया राम की ,सब जगत विगोया।। 3

अखा जी का भी कथन हैं :

धे ,घ्याता माया सब तेरी, तुम हो पूरन धाम । 4–

---

1:– कबीर, कबीरवाणी, पद–127, सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, सन् 1987 ई.

2:– वही, पद–128

3:– दादू दयाल, माया कौ अंग, साखी–108, सं परशुराम चतुर्वेदी, वाराणसी नागरी प्रचारिणी सभा, सं. 2030 वि.

4:– अक्षयरस, धुआसा, राग काफी, पृ.–11, सु. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण–1963 ई.

क्या चारा है मेरा रे ?

सब खेल रच्या है तेरा रे। 1—

मानस में भी तुलसी दास जी ने माया के संदर्भ में स्पष्ट कहा है :

अति प्रचंड रघुपति कै माया।

जेहि न मोह अस को जग जाया।। 2—

प्रभु माया बलवंत भवानी।

जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ।। 3—

आग्रा के परम संत स्वामी जी महाराज भी फरमाते हैं :

शब्द से माया फैली भारी । 4—

भारत में सभी दर्शनों में मायावाद का स्थान है ।

ऋग्वेद में इन्द्र माया के द्वारा अनेक रुपों को धारण करते हुये दिखाई देते हैं । 5—

श्वेताश्वर उपनिषद में भी कहा गया है कि माया शक्ति के द्वारा परमात्मा संसार का निर्माण करता है तथा आत्मा इसी माया से आबद्ध रहती है —

मायां तु प्रकृतं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्

तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत।। 6—

---

1:— वही, 18. अलख पियु को लिखिया रे

2:— मानस, 1.127.4

3:— मानस, 1.61.5

4:— सारवचन, पृ. 88

5:— ऋग्वेद,6—47—18, 6:— श्वेताश्वर उपनिषद, 4—10

कठोपनिषद में भी कथन है कि आत्मा अमृत से आच्छादित है ,इसलिये लोग उसे नहीं जानते 1—

स्वामी शंकराचार्य माया को भ्रमरुप मानते हैं :

अध्यासी नाम अवस्मित तद्बुद्धिः। 2—

सत्य वस्तु सार वस्तु तथा अविनाशी वस्तु पर पर्दा डालकर उसे ढक देना और असत्य, असार तथा नाशवान वस्तु में सत्य होने का भ्रम पैदा करना माया का खेल है । देखते समय तो स्वप्न सच लगता है पर जागते समय उसकी कलई खुल जाती है । इसलिये माया को अविद्या या भ्रम भी कहा गया है। संक्षेप में कहे तो माया झूठ को सच होने का धोखा पैदा करती है ।

संत कबीर पर्दाफाश करते हुये कहते हैं :

माया महा ठगनी हम जानी,
निरगुन फाँसि लिये कर डोलै , बोलै मधुरी बानी।।
केसव के कमला होइ बैठी, सिव के भवन भवानी।।
पंडा के मूरत होइ बैठी, तीरथ हूँ मैं पानी।।
जोगी के जोगिन होइ बैठी, राजा के घर रानी।।
काहू के हीरा होइ बैठी, काहू के कोड़ी कानी।।
भक्तन के भक्तिन होय बैठी , ब्रह्मा के ब्रह्मानी।।
कहै कबीर सुनौ भाई साधो, यह सब अकथ कहानी।। 3—

---

1:— कठोपनिषद, 1/3/2—3

2:— कबीर साहित्य की परख, पृ. 108, ले परशुराम चतुर्वेदी

3:—कबीर साहेब की शब्दावली, भाग—1, चितावनी और उपदेश, शब्द—36, बे. प्रे. , इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1989 ई.

दादू दयाल का भी कथन हैं कि जिस तरह सोते वक्त सपना सच लगता है उसी तरह इस झूठा संसार भी माया के कारण सच लगता है :

जे नाहीं सो देषिये, सूता सुपिनै माहिं।
दादू झूठा है गया, जागौ तो कुछ नाहिं।। 1—

यहु सब माया मृध जल, झूठा झिलिमिलि होइ।
दादू चिलका देषि करि, सति करि मान्या सोइ।। 2—

झूठा झिलमिलि मृधजल , पांणी करि लीया।
दादू जुग प्यासा मरै, पसु प्राणी पीया।। 3—

अखा जी भी कहते हैं —

समजी न जाय एवी माया अटपटीजी' 4—

'दीसे नहि ने बलवती'— 5—

माया जीव को सत्य की अर्थात परमात्मा की याद भुला देती है । यह परमात्मा रुपी सत्य के असत्य होने और जगत रुपी असत्य को सत्य होने का भ्रम पैदा करती है। परमात्मा के प्रेम के स्थान पर जगत का प्रेम पैदा करके जगत से बॉधकर रखना माया की खूबी है । इन्द्रियों के भोग और विषय

---

1:— दादू दयाल, माया को अंग, साखी—5, पृ. 121, सं. परशुराम चतुर्वेदी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं. 2023 वि.

2:— वही, साखी—6

3:— वही, साखी—7, पृ.128

4:— अखेगीता, कड़वुं, 7:1

5:— अखेगीता, कड़वुं, 7.2

–विकार वास्तव में विषैले और विनाशकारी होते हैं । इनको आकर्षक और स्वादिष्ट बनाकर प्रस्तुत करना ही माया का चमत्कार है ।

कबीर साहिब कहते हैं कि माया ऐसी मोहिनी है कि सामान्य मनुष्यों की तो बात ही क्या , बड़े–बड़ ज्ञानी एवं चतुर भी इससे मोहित हो गये हैं :

कबीर माया मोहनी, मोहे जांण सुजांण।
भागां ही छूटै नहीं ,भरि भरि मारे बांण।।1

कबीर माया मोहनी, सब जग धाल्या घांणि।
कोई एक जन उबरै, जिन तोड़ी कुल की कांणि।।2

कबीर माया मोहनी, मांगी मिलै न हाथि।
गनह उतारि झूठ करि, तब लागी डोलै साथि।।3

दादू दयाल माया को डाकिणी कहते हैं और उसने कई लोगों को खाया है । उसके संग जो भी गया वह बचा नहीं है :

माया के सांगि जे गये, ते बहुरि न आये।
दादू माया डाकिणी, इन केते खाये।।4–

(दादू) रुप राग गुण अॅडसरे, जहॅं माया तहॅं जाइ।
बिद्या अष्यर पंडिता, तहॉं रहे घर छाइ।।5–

---

1:– क. ग्रं. , माया कौ अंग, साखी–6, सं. श्यामसुंदर दास

2:– वही, साखी–8 3:– वही, साखी–7

4:– दादू दयाल की बानी, भा–1, माया को अंग, साखी–25, पृ. 111, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

5:– वही, साखी–27

माया देखे मन खुसी, हिरदै होइ बिगास।
दादू यहि गति जीव की , अंति न पूरौ आस।। 1—

(दादू) माया मगन जु है रहे, हम से जीव अपार।
माया माहै ले रही, डूबे काली धार।। 2—

अखा जी भी कहते हैं कि माया ठगिनी है और उसने समस्त संसार को ठगा है :

माया ठगणी काल ठग तिन सब ठगिया संसार।
कामना दोरी कंठ में सब करते फिरे पोकार।। 3—

ममता तेली, मन वृषभ, माया—धाणी फेर।
अखा पिलाये कामना और होता जाये उमेर।। 4—

माया की प्रबलता की ओर हमारा ध्यान दिलाते हुये संत कहते हैं कि माया की सेना बहुत विशाल है । आज तक संसार में भला कौन पैदा हुआ है जो माया से पराजित न हुआ हो ? काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार विषयों को आशा और तृष्णा , ममता, मान, मद, और यौवन — ज्वर ,सांसारिक शोक और चिंता तथा पुत्र, धन और लोक —प्रतिष्ठा — की प्रबल इच्छा ,ये सब माया की सेना के प्रमुख अंग है । अतः कबीर जीवों को चिताते हुये कहते हैं :

---

1:— वही, साखी'18, पृ. 110

2:— वही, साखी—30, पृ. 111

3:— अक्षयरस, साखियाँ, 92—अथ सहेज अंग, साखी—1, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई.

4:— वही, 89—अथ माया को अंग

तोरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया का रे सोवै।।
पाँच पचीस तीन है चोखा, यह सब कीन्हा सोर।
बटोहिया का रे सोवै।।
जाग सवेरा बाट अनेड़ा, फिर नाहिं लागै जोर।।
बटोहिया का रे सोवै ।।
भवसागर इक नदी बहतु है , बिन उतरे जाव बोर।।
बटोहिया का रे सोवै।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जागत कीजे भोर।
बटोहिया काहै रे सोवै।। 1

संत दादू दयाल जी भी स्पष्ट कहते है :

मेरी करत जगत षीन्हा, देखत ही चलि जावै।
काम कोध त्रिसना तन जालै, ता थै पार न पावै।।
मूरषि ममिता जनम गँनावै, भूलि रहे इहि वाजी।
बाजीगर कूँ जानत नाहीं, जनम गँवावै बादी।।
परपंच पंच करै बहुतेरा, काल कुटँव के ताई।
विष के स्वादि सबै ये लागै, ता थै चीन्हत नाहीं ।।
एता जिय में जाणत नाहीं, आइ कहाँ चलि जावै।
आगै पीछैं समझै नाहीं , मूरिख यौ डहकावै।।
ये सब भरम भानि भल पावै ,सोधि लेहु यो साई।
सोइ एक तुम्हरी साजन, दादू दूसर नाही।। 2—

---

1:— क. सा. की शब्दावली, भाग—3, चितावनी, शब्द—1, बे. प्रे द्वारा प्रकाशित , इलाहाबाद, सन् 1989 ई.

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—2, राग गौणी, शब्द—44, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित सन् 1984 ई

अखा ने भी यह बात मार्मिक रुप से कही है :—

राम रसायन अक्चत नहि नर बहोत जिये ते कीनो कहा भगोरे।
राम की ठोर चाम रंग राच्यो ज्यों स्वान सुनी कीरे ही लग्यो रे।
धन तन त्रिया सुरासे बसो मन जैसे बसो मीन को मन पानी।
धन तन त्रियासो छोंड़ जात है और मन की प्रीत न होत पुरानी।
रे मन राम भजन की ठोर ते भजी रंग रंगीली सी रामा।
सुंदर स्याम सुनायो सुन्योहे स्वे सत्य रुप सहरावे तु स्यामा। 1—

माया से उन्मत और अहंकार के पर्दे से ढ़की आत्मा अपने सतत जागृत प्रियतम परमात्मा के साथ एक ही सेज पर सोई हुई है , पर प्रियतम से इनका मिलाप नहीं होता। इसलिये संत आत्मा को जागृत करते हैं और इसे चिताते है कि यह अपने मानव जीवन के इने—गिने क्षणोंको बरबाद न करे और अपने प्रियतम को रिझाकर उनके अमर प्रेम की पात्री बने । और यह कार्य केवल सदगुरु ही कर सकते है और उनके दिये हुए नाम के सुमिरन करने से हो सकता है ।

कबीर कहते हैं—

कबीर मायां मोहनी, जैसी मीठी खॉड।
सतगुरु की कृपा भई, नही तो करती भॉड।। 2—

---

1:— अक्षयरस, संत प्रिया, पद—13,14 सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह , म. स. वि., बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई.

2:— क. ग्रं. माया को अंग, साखी—7, सं. डॉ. श्यामसुंदर दास

माया दासी संत की ,ऊंभी देइ असीस।
बिलसी अरु लातौं छड़ी ,सुमरि सुमरि जगदीस।। 1 –

संत दादू दयाल भी कहते हैं कि नाम ही निर्मल है इसके अलावा सब अंधकार है:–

दादू साई सत्ति है , दूजा भर्म बिकार।
नॉव निरंजन निर्मला, दूजा घोर अँधार।। 2–

(दादू) अमृत रुपी आप है , और सबै विष झाल।
राखण हारा राम है , दादू दूजा काल।। 3–

माया से छूटने के लिये सदगुरु चरण में जाने का उपाय अखा जी बताते है :

माया पीडती जाणी परिब्रह्म आराधीए,
साधीए स्वामीने चित्त पुरे,
सदगुरु केरा चरण आदर करी,
मारग झालीये मन शूरे।। 4–

---

1:– वही, साखी–10

2:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, माया–88, बेलबीडियर प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित

3:– वही, माया–82

4:– अखानी काव्यकृतिओ , खण्ड–2, सद्गुरु महिमा अने संत महिमांना पद, राग केदारो, पद–45, सं. डॉ. शिवलाल, जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1988 ई.